सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ – 226007

फोन : 0522–2740406

फैक्स : 0522–2741221

E-mail : nadwa@sancharnet.in

nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग

लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जूलाई, 2013 वर्ष 12 अंक 05

इस्लाम दीने हक़

रब का फ़रमान यह तो हक़ है
कह दो यह इस्लाम बेशक हक़ है
रबने यह प्यारे नबी से है कहा
और नबी ने सब को यह बतला दिया
लाओ ईमां या कि तुम मुनकिर रहो
पर नतीजा दोनों का भी तुम सुनो
हक़ वाला जन्नती इन्सान है
जो न माने आग का मेहमान है
रहमतें प्यारे नबी पर हों मुदाम
और लाखों रब के हों उन पर सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
आने वाली नस्ल और हमारी	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	7
दाअ़ी सुधारक और सरपरस्त	महमूदुल हसन अन्सारी	10
दहेज लोभियों को सबक सिखाया	ग्रहीत	15
कुर्आने हकीम एक नुस्ख़–ए–कीमिया	मौ0 सै0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी	17
मारक़–ए–ईमान व माद्दीयत	मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	18
ईमान वालों की तलाश	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	21
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	24
रमज़ानुल मुबारक	इदारा	26
इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर	नजमुस्साकिब नदवी	30
समाज से बुराइयाँ दूर कीजिए	अमतुल्लाह तस्नीम	32
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	37
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुअर्नि की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकर:

अनुवाद :- दुनिया व आखिरत की बातों में[1], और तुझसे पूछते हैं यतीमों का हुक्म[2], कह दे, उनके काम का बेहतर है और अगर उनका खर्च मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लह जानता है खराबी करने वाले और संवारने वालो को[3], और अगर अल्लाह चाहता तो तुम पर मशक्कत डालता[4], बेशक अल्लाह जबरदस्त है तदब्बुर वाला[5(220)]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. यानी दुनिया फानी है मगर महल्ले हवाइज है और आखिरत बाकी और सवाब की जगह है, इसलिए सोच समझ कर हर एक मामले में उसके मुनासिब खर्च करना चाहिए और मसलेहते दुनिया और आखिरत दोनों को पेशे नज़र रखना मुनासिब है और अहकाम को वाजेह तौर पर बयान फरमाने से यही मतलूब है कि तुमको फिक्र करने का मौका मिले।

2. कुछ लोग यतीमों के माल में एहतियात न करते थे तो उस पर हुक्म हुआ था कि "वला तक्रबू मालल यतीम....."। तो जो लोग यतीमों की परवरिश करते थे डर गये और यमीमों के खाने और खर्च को बिल्कुल अलग कर दिया, क्योंकि शिरकत की हालत में यतीम का माल खाना पड़ता था, इसमें ये दुश्वारी हुई कि एक चीज़ यतीम के लिए तैयार की, अब जो कुछ बचती खराब जाती और फेंकनी पड़ती। तो इस पर यतीमों को नुकसान होने लगा। इस पर ये आयत उतरी।

3. यानी मकसूद तो सिर्फ ये बात है कि यतीम के माल की दुरुस्ती और इस्लाह हो, जिस मौके में अलाहिदगी में यतीम का नफा हो उसको इख्तियार करना चाहिए।

4. मशक्कत में डालता यानी खाने पीने में यतीमों की शिरकत अला वजहिल इस्लाह भी मुबाह न फरमाता या ये कि बिना इल्म व बिला कस्द मजबूरन भी अगर कुछ कमी या बेशी हो जाती तो उस पर भी पकड़ करता।

5. यानी भारी से भारी हुक्म दे सकता है, इसलिए कि वह जबरदस्त है, लेकिन ऐसा न किया बल्कि सहूलत का हुक्म दिया, इसलिए वह हिक्मत व मसलिहत का मुवाफिक़ करने वाला है।

❖❖❖

आतंक फैलाना, चोरी डकैती और रक्त पात करना, किसी की बहन बेटी पर बुरी नज़र डालना महा पाप है। हर प्रकार के पाप से खुद बचो और दूसरे को बचाओ भले काम खुद करो और दूसरों को भलाई पर उभारो।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

इस्लाम की बुनियाद

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर है। 1. गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद (पूज्नीय) नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। 2. नमाज़ कायम करना 3. जकात देना 4. रमज़ान के रोज़े रखना 5. और क्षमता हो तो हज करना।

(बुखारी—मुस्लिम)

जान व माल की हिफाजत की शर्तः-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उस वक्त तक जंग करूँ कि वह गवाही दे दें कि अल्लह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ कायम करे और जकात दें। जब वह ऐसा करेंगे तो उनकी जानें और माल महफूज़ हो जाएंगे मगर इस्लाम के हक़ के साथ[1] और उनका हिसाब अल्लाह पर है। (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत मआज़ रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझको यमन की तरफ भेजने का इरादा किया और यह कहा कि अहले किताब को तुम पहले इस्लाम की दावत देना जब वह उसकी गवाही दे दें की अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्यनीय नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं तो फिर ये कहना कि अल्लाह ने अपने बन्दे पर दिन—रात में पांच वक्त की नमाज़ें फर्ज़ की हैं। जब वह उसको कुबूल कर लें तो ये बता देना कि अल्लाह ने ज़कात भी फर्ज़ की है कि अमीरों से लेकर गरीबों को दे दी जाए। जब यह उसको मान लें तो फिर उनके उम्दा—उम्दा माल छांट कर न लेना, और मजलूम की बददुआ से बहुत बचना, मजलूम की फरियाद और अल्लाह के दरमियान कोई पर्दा नहीं। (बुखारी—मुस्लिम)

---

1. अर्थात जब इस्लाम ही का कोई मुतालबा उनकी जान व माल का होगा जब ही उनका लेना होगा।

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार .....

किया है, जिसमें प्रकाश के त्योहार दीपावली तथा हनुक्का को दर्शाया गया है।

प्रत्येक टिकट पाँच—पाँच रूपये का है। भारत—इजरायल राजनयिक संबंध 1992 में स्थापित हुए थे। हनुक्का यरूशलम के ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में पवित्र मंदिर पुनः समर्पित किए जाने की स्मृति में आठ दिनों तक मनाया जाता है। इस दौरान खिड़कियों व द्वारों पर मोमबत्तियां जलाई जाती हैं।

❑❑❑❑

आने वाली नस्ल और हमारी ज़िम्मेदारी

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

सूर–ए–हुजुरात में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को मुखातब करके फरमाया "ऐ ईमान वालो अपने को और अपने घर वालों को आग से बचाओ" दूसरी आयात और अहादीस से यह मालूम है कि आग में वही जलेगा जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाएगा और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ना फरमानी में ज़िन्दगी गुज़ारेगा और ना फरमानी की हालत ही में उसकी मौत होगी। यह बात मालूम रहे कि आग में जलने से यहां मुराद दोज़ख़ की आग है।

यह बात तो सभी मानते हैं कि दुनिया की जिन्दगी आरजी (अस्थाई) है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि कियामत आएगी कियामत एक भयानक भूकम्प है जिस में सारे जीवधारी मर जाएंगे चाँद, सूरज, पहाड़ धुनी हुई रूई की तरह उड़ते फिरेंगे बड़ा भयानक भूकम्प होगा, सब कुछ समाप्त हो जाएगा सिर्फ अल्लाह की जात बाकी रहेगी (या जिसे अल्लाह तआला चाहेंगे) यह सब पहले सूर की आवाज़ पर होगा, फिर अल्लाह के हुक्म से दोबारा सूर फूंका जाएगा तो सब कुछ फिर पैदा हो जाएगा और दुनिया की पैदाइश से अब तक जितने इन्सान पैदा हुए थे सब जीवित हो कर एक मैदान में एकत्र होंगे फिर उन सब के आमाल (कर्मों) का हिसाब किताब होगा, उसके बाद हर एक के लिए उसके आमाल के लिहाज़ से (कर्मानुसार) अल्लाह तआला के हुक्म से जन्नत या दोज़ख़ का हुक्म होगा। जन्नत में अल्लाह के नेक बन्दों के लिए ऐसी ऐसी नेअमतें (सुख सामग्रियां) हैं जिन को इन्सान सोच भी नहीं सकता, जन्नती सदैव जन्नत में रहेंगे।

दोज़ख़ आग का घर है जिसे अल्लाह तआला ने अल्लाह तआला की बात का इनकार कर देने वालों और अल्लाह के साथ साझीदार ठहराने वालों के लिए तैयार की है।

जहन्नम में कुछ लोग (जो ईमान तो लाये लेकिन बड़े–बड़े गुनाह किये) कुछ दिनों के लिए डाले जाएंगे, परन्तु अल्लाह के बागी, अल्लाह को न मानने वाले, या अल्लाह के साथ साझीदार ठहराने वाले सदैव जहन्नम में जलेंगे जहन्नम में मौत न आएगी कि अज़ाब से छुट्टी मिल जाए वह हमेशा अज़ाब भुगतते रहेंगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अन्नारू हक़्कुन" यानी दोज़ख हक़्क़ है ऐ अल्लाह जहन्नम के अज़ाब से बचा।

दोज़ख की आग और उसका अजाब सोच कर ही कलेजा दहलने और जिस्म काँपने लगता है, उसी दोज़ख़ की आग और उसके अजाब से बचने और अपने घर वालों को बचाने का अल्लह तआला ने हुक्म दिया है। अल्लाह

का करम, एहसान और उसका शुक्र है कि उसने हमको ईमान की दौलत से नवाज़ा और अच्छे कर्मों, नमाज़, रोज़ा, ज़कात वगैरह (शरीअत के मुताबिक काम करने) की तौफीक़ दे रहा है, साथ ही बच्चों को दीन सिखाने का काम भी हो रहा है, अगरचि मुसलमानों के बच्चे बड़ी तादाद में दीनी तालीम से महरूम हैं फिर भी मस्जिदों और दीनी मकतबों में बड़ा काम हो रहा है और अल्लाह की तौफीक़ से मुस्लिम बच्चों को जहन्नम की आग से बचाने की कोशिशें जारी हैं। लेकिन आइन्दा इस काम में कुछ रुकावटें नज़र आ रही हैं, उन रुकावटों को दूर करने की कोशिश हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है।

हमारी हुकूमत का प्लान है कि मुल्क का हर बच्चा तालीम हासिल करे और कोई बच्चा अन पढ़ न रहे, हुकूमत ने ऐलान किया है कि हाई स्कूल तक हर बच्चे को मुफ्त तालीम देना हुकूमत की ज़िम्मेदारी है। इसके लिए सरकार ने तरहीब (डरानै) और तरगीब (प्रलोभन देने) दोनों पहलू अपनाएं हैं तरहीब में यह ज़ाब्ता (नियम) सुनने में आ रहा है कि 14 वर्ष तक के बच्चों को गैर मंजूर शुदा मदरसों में पढ़ाना काबिले सज़ा (दण्डनीय) जुर्म होगा, अगरचि अभी यह जाब्ता कहीं लागू नहीं हुआ है। इस्लामी तन्ज़ीमें कोशिश में हैं कि दीनी मदरसों में पढ़ने वाले बच्चों को इस ज़ाब्ते से अलग रखा जाए और इम्कान है कि ऐसा हो जाए। लेकिन तरगीब वाली तदबीर इससे ज़्यादा मुआस्सिर (प्रभाव कारी) नज़र आ रही है। बहुत से मुस्लिम बच्चे दोपहर के खाने के लालच में उन स्कूलों में दाखिला ले लेते हैं जहाँ दोपहर का खाना मिलता है। दूसरी बात यह कि दीनी मकातिब के अक्सर मकतबों में अच्छी पढ़ाई नहीं होती इसलिए प्राइमरी तालीम के बाद पहली बात तो यह कि छठे में उनके दाखिले में कठिनाई होती है फिर अगर दाख़िला मिल गया तो मैथ और साइन्स जैसे मजमूनों में हाई स्कूल करना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। इस सबब भी बच्चे दीनी मक्तबों में पूरे वक्त के लिए दाखिला नहीं लेते। हम देखते हैं कि पूरा दिन चलने वाले मकातिब में तलबा की तादाद बहुत कम है यह बड़े अफ़सोस की बात है और इसका हल निकालना बहुत ज़रूरी है।

अल्लाह तआला ने अपने दीन की हिफाज़त का ज़िम्मा ले रखा है और यह दीन इनशा अल्लाह कियामत तक बाकी रहेगा, चुनांचि अल्लाह तआला ने बहुत से दीनी काम करने वालों के दिलों में यह बात डाली और उन्होंने छोटे बच्चों की दीनी तालीम के लिए सरकारी स्कूलों के औक़ात के बाद का वक्त रखा, अस्र से इशा तक तालीम का नज्म किया। लखनऊ के मुहल्ला चिकमन्डी में शाम के वक्त की पढ़ाई का मिसाली (आदर्श) काम हो रहा है। उन तमाम हजरात को भी यह तरीक़ा अपनाना चाहिए जो दीनी मक्तब चला रहे हैं मगर उनको दिन के औकात में बच्चे नहीं मिल रहे हैं।

शेष पृष्ठ..... 29 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

सुलह के लिए कुरैश का एकतरफा सख़्त रवय्या-

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुआहिदे (समझौते) की यह दफा लिखाई कि अल्लाह के रसूल ने यह मामला इस पर किया है कि तुम लोग हमारे और बैतुल्लाह के दरमियान हाएल न हो, रूकावट न बनो और हम इसका तवाफ कर लें, सुहैल ने कहा कि अगर ऐसा होगा तो हमें यह डर है कि अरबों में यह चर्चा होने लगे कि हमने दब कर समझौता किया है, इसलिए इस पर अमल इस साल नहीं आइन्दा साल किया जाये, उस वक्त आप तवाफ कर सकते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दफा भी मुआहिदे में कुबूल कर ली।

सुहैल ने कहा कि इस मुआहिदे के मुताबिक यह भी होगा कि अगर हमारे यहां से कोई शख़्स आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां चला जाये ख़्वाह वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के मज़हब का मानने वाला हो तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको हमें पलटा देंगे, मुसलमानों ने कहा कि सुब्हान अल्लाह अगर कोई मुसलमान हो कर हमारे पास आता है तो हम उसे मुशरिकों के हवाले कैसे कर सकते है?

यह बात हो ही रही थी कि सुहैल के बेटे अबू जंदल बिन सुहैल बेड़ियों में गिरते पड़ते पहुंचे वह मक्के के नशेब (तल) से आये थे, और किसी न किसी तरह अपने आपको मुसलमानों तक पहुंचा दिया था, सुहैल ने अपने बेटे को इस तरह पहुंच जाने को देखा तो कहा कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुआहिदे के तहत यह पहला शख़्स है जिसकी वापसी का मुतालबा मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से करता हूँ, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अभी तो हमने मुआहिदे की तहरीर मुकम्मल भी नहीं कि, उसने जवाब दिया अगर ऐसा है तो फिर मैं किसी बात पर आपसे मामला करने पर तैयार नहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरे कहने पर (यानी मेरी ज़ाती फरमाईश पर ही) इन्हें इजाज़त दे दो, उसने कहा मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कहने पर भी इजाज़त नहीं दे सकता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अच्छा जो तुम्हारा जी चाहे करो, उसने कहा मुझे कुछ नहीं करना है, यह सुन कर अबू जंदल बोले, मुसलमानों! मैं मुसलमान हो कर आया हूँ और फिर मुशरिकों को वापस किया जा रहा हूँ, क्या तुम लोग देखते नहीं कि मेरे साथ क्या हो रहा है? उन्होंने अल्लाह के रास्ते में सख़्त तकलीफें उठायी थीं, सूरतेहाल को देख कर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरैशी नुमाइन्दे (प्रतिनिधी) के मुतालबे की बिना पर उनको वापस फ़रमा दिया।

इस मुआहिदे में दोनों फ़रीक़ों में यह भी तय हुआ कि दस साल तक दोनों ख़ून खराबे से परहेज करेंगे ताकि लोग अमन व इत्मिनान के साथ रह सकें और कोई किसी पर हाथ न उठाये और दूसरी बात यह तय हुई कि अगर कुरैश से कोई शख़्स अपने वली (स्वामी) व सरपरस्त (अभिभावक) की इजाज़त के बग़ैर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ निकला तो वह उसको वापस कर देंगे और अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों में से कोई शख़्स कुरैश के पास आ निकला तो वह उसको वापस न करेंगे और यह भी तय हुआ कि जो भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुआहिदे और हिफ़ाजत में दाखिल होना चाहे वह उनके साथ हो सकता है, इसी तरह जो कुरैश के मुआहिदे और हिफाज़त में आना चाहे उसको इसकी इजाज़त होगी, चुनांचे कबीले बनी बक्र के लोग कुरैश के हलीफ़ (सहप्रतिज्ञा) बने और कबीले बनू ख़ज़ाआ के लोग मुसलमानों के हलीफ़ बने[1]।

मुसलमानों का इम्तिहान-

जब मुसलमानों ने इस तरह की सुलह हो जाने और उसकी बिना पर वापसी की बात सुनी और यह देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किस तरह बर्दाश्त किया तो यह बात उनके लिए इतनी रूहफरसा (तकलीफदह) साबित हुई कि उनकी जान पर बन गई, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि0 हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गये फिर हज़रत अबु बक्र के पास आये और कहने लगे कि क्या हम हक़ पर और यह काफ़िर बातिल पर नहीं हैं? हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहाः क्यों नहीं? हम हक़ पर हैं और कुफ़्फ़ार बातिल पर हैं, हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा तो फिर क्यों दीन के मामले में हमको 'यह हिक़ारत (हीनता) हासिल हो रही है? और क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम से यह नहीं फ़रमाया था कि हम लोग बैतुल्लाह जायेंगे और तवाफ करेंगे? उन्होंने कहाः हाँ फरमाया था लेकिन क्या उनहोंने तुम से यह कहा था कि तुम इसी साल बैतुल्लाह जाओगे और तवाफ भी करोगे यह अल्लाह के रसूल हैं, उनी रक़ाब थामे रहो, हज़रत उमर रज़ि0 ने फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसी तरह की बात की, आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको इसी तरह समझाया।

हजरत उमर रज़ि0 बाद में अपनी इस बात पर अफसोस किया करते थे कि उन्होंने इतना भी क्यों कहा, अपने इसी अफ़सोस में उन्होंने कई ख़ैराती काम किये ताकि वह जिसको वह चूक और ग़लती महसूस करते थे उसकी पूर्ति हो जाये शायद उनके ज़ेहन में कुरआन मजीद की वह आयत थी जिसमें नबी के फैसले पर दिल में भी शुबहा (संकोच) लाने से मना किया गया हैः

"और जो तुम फैसला कर दो उससे अपने दिल में तंग न हों बल्कि उसको खुशी से मान लें" (सूरः निसा–65)।

1. तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

और तमाम सहाबा किराम, हज़रत उमर सहित, का यह रवय्या था इसमें फर्क नहीं आया था, कि नबी की बात अल्लाह तआला की तरफ से होती है, उसमें किसी शक व शुबहे की गुंजाईश नहीं है और इसी की तलक़ीन (उपदेश) क़यामत तक के लिए मुसलमानों को की गई है।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस सुलहनामे से फ़ारिग हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलामनों से फ़रमाया कि मिना में कुरबानी करने के लिए लाए हुए जानवरों को अब यहीं ज़बह कर दो, मुसलमानों की समझ में नहीं आ रहा था कि यह कैसे हो रहा है और क्या हो रहा है इसलिए वह नहीं समझ पाए कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फ़रमान का मतलब कुछ और तो नहीं है, इसलिए कि कुरबानी के जानवर मक्का पहुंचने से पहले ज़बह करने का कोई दस्तूर नहीं रहा है, इसीलिए वह कुरबानी करने के लिए नहीं बढ़े, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह महसूस कर के कि शायद मुसलामन बात नहीं मान रहे हैं, बड़ी फिक्र और मलाल हुआ कि क्या मुसलमान अपने नबी का हुक्म मानने से कतरा रहे है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी एहसासे मलाल के साथ अपने खेमे में दाखिल हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ज़ोज–ए–मुहतरमा हज़रत उम्मे सलमा आईं थीं, आपने उनसे अपने इस एहसास का तज़किरा किया, उन्होंने कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह नाफ़रमानी नहीं है, यह ज़ेहन के शदीद असर की वजह से बात न समझ पाने की वजह से होगा, लिहाज़ा आप खुद कुरबानी शुरु करें तो लोगों का ज़ेहन खुल जायेगा चूनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुरबानी के जानवरों की तरफ मुतवज्जेह हुए और उनको जा कर ज़बह करना शुरु कर दिया और उसके बाद सर मुडाया, मुसलमानों के लिए यह बात एक बड़े सानिहे (घटना) से कम न थी, इसलिए कि मदीने से निकलते वक्त उनके दिल में इसका वसवसा भी नहीं था कि उन्हें मक्के जाने और उमरा करने का मौका न मिल सकेगा और उनको अपनी मर्जी के खिलाफ ऐसी बात पर अमल करना होगा जिसमें उनकी एक तरह से बेइज़्ज़ती होगी जिसके लिए वह इस्लाम से पहले बिला झिझक जान दे देते और जान ले लेते थे, लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुरबानी करते और हलक़ कराते सर मुडाते देखा तो सब उसी वक्त तेज़ी से खड़े हो गए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करते हुए कुरबानी और हलक़ में मशगूल हो गए कि नबी के अमल के खिलाफ अमल नहीं करना है[1]।

सुलह (समझौता) देखने में अपमानजनक लेकिन नतीजे के लिहाज़ से लाभदायक–

इसके बाद आप सल्लल्लाहु

1. सुलह हुदैबिया की तफ़सील के लिए देखियेः सही बुख़ारी, ज़ादुल मआद 3/286, सीरते इब्ने हिशाम 2/308, अलबिदाया–वन–निहाया 4/164, अल–कामिल फित्तारीख़ 2/200

शेष पृष्ठ..... 31 पर

दाअी, सुधारक और सरपरस्त मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

—मौ० जाफर मसूद हसनी नदवी —लिपिः इं० महमूदुल हसन अंसारी

"हमारे मुहल्ले की रौनक़ चली गयी, बरकत उठ गयी, बहार रुख़्सत हो गयी, लगता है यह हादसा आपके घर में नहीं, हमारे घर में पेश आया है, नुकसान सिर्फ आप का नहीं हम सबका हुआ है, यह ऐसे मौलाना थे जिनसे हम हर वक्त मिल सकते थे, हर बात कह सकते थे, अपने मसायल उनके सामने रख सकते थे, वह बात ध्यान से सुनते थे, मुस्कराकर जवाब देते थे, दिमाग़ को तो संतुष्ट करते ही थे अपनी मुस्कराहट से दिल को भी खुश कर दिया करते थे।"

यह थे बयान मुहल्ले वालों के जो उनकी ज़बान पर आये, किसी शोक सभा में नहीं, राह चलते हुये, मस्जिद से घर और घर से मस्जिद जाते हुए, लोगों ने कुछ इस प्रकार अपने लगाव व मुहब्बत का इज़हार किया, सच्चाई के साथ, सादगी के साथ, खुलूस और नेक नियति के साथ।

हो सकता है कि आप सोच रहे हों कि इतनी बड़ी शख़्सियत, काम का इतना बड़ा मैदान, अत्ययधिक ऊँची ख़िदमात, इतना बड़ा कार्य क्षेत्र और हर कार्य क्षेत्र में इस तरह की स्वीकृति, और चार्चा सिर्फ मुहल्ले की, पड़ोस की, गली में चलते फिरते लोगों की, घर और मस्जिद के बीच रास्ते की।

सोचते हों तो सोचिये और खूब सोचिए, क्योंकि यही चीज़ है, सोचने की, विचार करने की, समझने की और सबसे बढ़कर अपनाने की, जान—पहचान किससे आपकी होती है? हर मौक़े पर सामना किससे आपका होता है? सम्बन्ध किससे बनता और बिगड़ता है? टकराव किस से और कब कब होता है? इन्हीं पड़ोसियों से रिश्तेदारों से मुहल्ले के लोगों से मस्जिद में आने जाने वालों से, मुहल्ले के दुकानदारों से, रास्ते में भीड़ लगाये मुहल्ले के नौजवानों से। अगर उनकी नज़र में आप अच्छे हैं, उनकी गवाही आपके हक़ में है, उनके दिलों में आपके लिए जगह है, उनको आप के जाने से दुखः हुआ है, उनकी ज़बान पर आपकी भलाई की चर्चा है तो निश्चित रूप से आप अच्छे हैं। अब न आपको किसी प्रमाण की आवश्यकता है न ही किसी गवाही की।

वह मेरे रिश्तेदार (मामू जाद भाई) थे, पड़ोसी भी थे, आने जाने का एक ही रास्ता था, एक ही साथ नाश्ता एवं खाना। अस्र के बाद प्रतिदिन ही उनकी मजलिस को देखने का मौक़ा मिलता था। मेहमानों के साथ उनका वर्ताव, रिश्तेदारों के साथ उनका वर्ताव, पड़ोसियों के साथ उनका वर्ताव, कान भी इसके गवाह हैं और आँख

भी। हर प्रकार से उन्हें आदर्श के समीप पाया। आदर्श हमारे लिए सिर्फ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात है और जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदर्शों को अपनाए वह वही आदर्श प्रस्तुत करने वाला है।

जब तक उनके स्वास्थ्य ने साथ दिया, ज़िन्दगी का मक़सद दावत और इबादत को बनाया, ना दावत रोड़ा बनी इबादत के रास्ते में और ना ही इबादत रास्ते आई प्रचार में। दोनों में से एक पर अमल करने वाले आप को बहुत मिल जाएंगे लेकिन दोनों के सामंजस्य को साथ लेकर चलने वाले आपको एकका दुक्का ही नज़र आएंगे। आप मरहूम ने अपनी ज़िन्दगी में सीरते पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इन विशिष्टाओं को बहुत अच्छी तरह समो लिया था।

हिरकल और हज़रत अबू सुफियान रज़ि0 के बीच होने वाली बातचीत, सीरत की किताबों में महफूज़ है। इस बातचीत के आधार पर किसी के बारे में राय क़ायम करना आसान है। हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि0 ने हिरकल के सवालों के जवाब में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो विशिष्टांएं बयान की उनकी मामूली सी झलक भी यदि किसी के यहां नज़र आएगी तो वह उसके क़द को इतना ऊँचा कर देगी कि लोग उस पर रश्क करेंगे और उस मक़ाम तक पहुंचने की तमन्ना करेंगे।

बात यह मामूली नहीं बहुत अहम है कि जो मौलाना मरहूम से जुड़ा वह फिर उनसे अलग नहीं हुआ। ज़रूरत इन्सान को कहीं भी ले जा सकती है, यह ज़रूरत उनसे सम्बन्ध रखने वालों को भी इधर से उधर ले गयी। शहर, देश छोड़ लोग समन्दर पार गये लेकिन सम्बन्ध उसी तरह स्थापित रहा, दूरी ने मुहब्बत और बढ़ाई। मैं समझता हूँ कि इस कारण कहनी और करनी का एक होना, पारदर्शिता, सादगी, नीमी, आवभगत, हमदर्दी और दूसरों के जज़बात व एहसासात का पूरा ख़्याल था।

उनसे सम्बन्ध रखने वालों में बड़ी तादाद उन लोगों की थी, जो समाज में वह जगह नहीं रखते थे जो जगह लोगों का ध्यान केन्द्रित करता हो, ऐसे लोगों को मजलिस में जगह मिलती है, लेकिन कुछ दूर, ध्यान तो उनकी तरफ दिया जाता है लेकिन जरा कुछ फासले से, क्योंकि उनके पास न तो दौलत होती है न वजाहत (प्रतिष्ठा) होती है न निस्बत होती है और न जाहिरी शान शौकत, लेकिन ऐसे हज़रात को मैंने छोटे भईया अब्दुल्लाह की मजलिस में बहुत ही करीब पाया, मैंने कभी नहीं देखा ऐसे किसी व्यक्ति को उन्होंने नाश्ते या खाने के मौके पर नाश्ता या खाना किसी और से भिजवा दिया हो, और खुद घर में घर वालों के साथ खाया हो, या दस्तरख़्वान पर उन का ध्यान उसके मुकाबले के दूसरों पर ज्यादा रहा हो, या वार्तालाप में उसको नजर अंदाज़ किया हो, या उसके सवाल का जवाब बेएतिनाई (ध्यान न देना) दिया हो। वह बे वक्त आये, आराम के मौके पर आये, जरूरत से आयें, या बे

जरूरत आयें, लगता था कि वह स्वागत के लिए पहले से तैयार बैठे हैं।

आधुनिकता का बोल बाला दौलत का ज़िक्र और दौलत मन्दों की इज्जत तौक़ीर (प्रतिष्ठा) से कौन सी मज़लिस पाक है, तलाश करना पड़ता है ऐसी मजलिसें और ढूँढने पड़ते हैं ऐसे व्यक्ति जिन की मजलिस में इज़्जत मिलती हो, दीन की बुनियाद पर इल्म की बुनियाद पर अम्ल की बुनियाद पर मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी की मजलिस उन्हीं नादिर व नायाब मजलिस में से एक थी।

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी एक दवा साज कम्पनी (हसनी फार्मेसी) के मालिक थे, शिक्षा–दीक्षा संस्कार, दावत व इस्लाह के साथ साथ कारोबार से भी जुड़े थे। कारोबार से सम्बन्धित उनके दिमाग में जो मनसूबे हों दिल दिमाग से उनके जिस तरह के ख़्यालात हों, लेकिन कारोबार के लिए फिक्र मन्द, उसकी तरक्की के लिए परेशान कभी नहीं देखा। क़नाअत जोहद (थोड़ी सी चीज़ पर संतोष) और सादगी ने उनकी आमदनी और आमदनी के जरिये की फिक्र से बिलकुल आज़ाद कर रखा था, उनको फिक्र थी तो सिर्फ दावत की, कोशिश थी तो सिर्फ समाज की भलाई की। ख़्याल था तो सिर्फ लोगों की तरबियत का, यही फिक्र उनकी गिज़ा यही कोशिश उनकी दवा, और यही ख़्याल उनके लिए इत्मीनान (संतोष) का सामान था।

गैर मुस्लिमों को इस्लाम की दावत देने वाले वह अकेले नहीं थे न जाने दुनिया में कितने लोग हैं जो यह फर्ज अन्जाम दे रहे हैं। अपने–अपने इलाक़े, अपनी–अपनी सतह पर, अपने–अपने अन्दाज़ से। न मैंने सब को देखा है, और न मुझे सब का इल्म है। लेकिन मौलाना अब्दुल्लाह हसनी को ज़रूर मैंने करीब से देखा है, मोबाइल पर उनको वार्तालाप करते हुये सुना है। और गैर मुस्लिमों से मुलाकात करते हुए उनको देखा है। इस्लाम लाने की खबर पर उनकी आँख की चमक और चेहरे पर खुशी की वह लहर हम में से हर शख़्स साफ महसूस कर लिया करता था। लगता था कि वह प्यासे थे उनको पानी मिल गया। बेचैन थे उनको क़रार आ गया, और फिर काम उन का यहीं पर समाप्त नहीं हो जाता था, नव मुस्लिमों की पूरी फिक्र उनकी जरूरतों का पूरा ख़्याल, उन की समस्या के समाधान में पूरी दिल चस्पी और भविष्य में उनके भरण पोषण की फिक्र। यह उनकी ऐसी विशेषता थी जो कम दाईयों में नज़र आती है।

सौगात किसे नहीं मिलते, और हदाया (तोहफे) किसको नहीं पहुंचते, उनमें मंहगे भी होते हैं और सस्ते भी, पसन्दीदा भी होते हैं, और नापसन्दीदा भी, लेकिन होता यह है कि पसन्दीदा और कीमती तोहफे रख लिए जाते हैं, अपने इस्तेमाल के लिए अपनी औलाद के लिए, अपने घर वालों के लिए और मामूली और गैर मर्गूब (जो मन की पसन्द न हों) बाँट दिया जाता

है। आने जाने और मिलने जुलने वालों में और नाम दिया जाता है उसको दरियादिली और सख़ावत का। लेकिन मरहूम का मिजाज़ इस सिलसिले में लोगों से अलग था। उनके यहां महंगा और सस्ता, मामूली, और अच्छा, पसन्दीदा और नापसन्दीदा की कोई क़ैद नहीं थी। वह कीमती से कीमती चीज़ बड़ी खुशी से दूसरों को दे दिया करते थे और पसन्दीदा से पसन्दीदा चीज़ें बड़ी आसानी से दूसरों को खिला दिया करते थे।

वह उस मुकाम पर पहुंच गये थे जहाँ सेवा के लिए लोगों की बड़ी भीड़ लगी होती है। गैरों को तो जाने दीजिए कष्ट होता है उनसे काम कराने में झिझक होती है उन से सेवा लेने में। घर में भांजों और भतीजों के रहते हुए वह अपना काम स्वयं करते थे। अस्र के बाद की मजलिस में पहुंचे लोगों के लिए चाय का थरमस खुद ले कर जाते थे, मेहमान आता तो खाने पीने का सामान खुद पहुंचाते थे, उनके छोटे खुद से बढ़ कर उनके हाथ से वह चीज़ें लेने की कोशिश करते, कभी कामयाब होते और कभी नाकाम।

शरीयत के खिलाफ अमल में वह खामोश नहीं रहते थे गल्त बोलने पर इस्लाह (सुधार) करते थे। बदसलीकगी पर तम्बीह करते थे लेकिन मुहब्बत के साथ, नेकनियती के साथ, भलाई के जज़्बे के साथ। नतीजा यह निकलता था कि उनके टोकने का असर पड़ता था, दिल उनकी बात को मानता था और उनका टोकना कभी किसी को बुरा नहीं लगता था।

वह एक दायी (दीन की दावत देने वाला) के साथ एक सुधारक भी थे। उनकी दावत (निमन्त्रण) ने गैर मुस्लिमों पर गहरा असर डाला इसी तरह उनकी इस्लाही कोशिशों ने बदअकीदा लोगों की ज़िन्दगियों को बदलने में बड़ा काम किया।

विभिन्न मदरसों, अन्जुमनों, सोसाइटियों के वह नाज़िम, अध्यक्ष या सरपरस्त थे। लेकिन उनकी ज़िनदगी में न नाज़िमों वाली शान थी न ही कोई कार्यालय, और न ही कोई सेवक। वह सादगी का एक नमूना थे और आदर सत्कार की आकृति। वह सिर्फ अब्दुल्लाह थे अर्थात खुदा का बन्दा और यही बन्दगी मोमिन की मेराज है।यही बन्दगी उसके लिए मोक्ष प्राप्ति का रास्ता है। यही बन्दगी उनका सबसे बड़ा पुरस्कार है।

ज़िन्दगी के साथ जिस तरह मौत लगी है, सेहत के साथ उसी तरह बीमारी अचानक आने वाली मौत से तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी पनाह मांगी है। बीमार होना, तकलीफ उठाना, परेशानी में होना, मोमिन के लिए रहमत का जरिया है और अगर यह सब्र के साथ है तो इबादत है। एक कांटा भी चुभता है तो कफ्फारा बनता है, नेकियों में इज़ाफा (बढोत्तरी) करता है, दिल की सफाई करता है, रूह को ताकत बख़्शता

है, दरजात को बुलन्द करता है। अपने इस बन्दे को भी अल्लाह तआला ने नवाज़ा, बीमारी दे कर, करम फ़रमाया सब्र दे कर, रहम फ़रमाया तकलीफ़ से बचाकर, मगफ़िरत का हकदार बनाया बन्दगी की तौफीक़ दे कर।

बीमारी लाहक़ होती है, कमज़ोरी है कि बढ़ती चली जा रही है और खुराक कम से कम तर होती जा रही है लेकिन जब पूछिये, "अलहम्दु लिल्लाह", ज़बान पर यह कलमा किसके हुक्म से जारी हुआ? यह फजले ख़ुदावन्दी नहीं है तो और क्या था। बीमारी में तो लोगों की नमाज़ें छुटी हैं, यहां नमाज़ का छुटना तो दूर की बात, ज़मात भी एक वक़्त की नहीं छूटी, ज़िन्दगी की आखिरी नमाज़ भी जमात ही के साथ अदा की, दो आदमी सहारा देकर बिढ़ाते थे और खुदा का यह बन्दा इमाम की इत्तिबा में अपनी नमाज़ अदा करता था।

दुनिया से रुख़सत होने के बाद परिवार और तअल्लुक़ वाले बैठते हैं विरासत की तक्सीम के लिए या परिवार के मआशी मसाएल को हल करेन के लिए लेकिन यह जाने वाला ऐसा था कि लोग जमा हुए उसके दावती, तरबियती और इस्लाही कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु तरतीब देने के लिए।

मुबारक थी उनकी ज़िन्दगी, मुबारक थी उनकी बीमारी और मुबारक थी उनकी मौत। ज़िनदगी गुजरी दावत के साथ, बीमारी गुज़री सब्र के साथ और मौत आई बन्दगी के साथ।

"रही यह दीवार तो वह इस शहर में रहने वाले दो यतीम लड़कों कीथी और उसके नीचे उनका एक ख़ज़ाना गड़ा हुआ था और उनका बाप एक नेक आदमी था इसलिए आपके परवरदिगार ने यह चाहा कि यह दोनों लड़के आपनी जवानी उम्र को पहुंचे और अपना खज़ाना निकाल लें, यह सब बापके रब की रहमत की बिना पर हुआ"।

(सूर–ए–कहफ़–82)

यह आयत सफ़रे आख़रत पर जाने वाले एक सालेह बाप की कमसिन औलाद के लिए खुशखबरी है। यक़ीन है कुराने करीम की इस आयत पर, और यक़ीन है रहमान की रहमानियत और रहीम की रहीमियत पर, कि वह इस सालेह बाप के कमसिन बेटे पर अपनी रहमतों की बारशि करेगा। और वह बेटा आसमानें इल्म व फज़ल पर एक सितारा बन कर चमकेगा और रुश्दोहिदायत का सूरज बन कर दुनिया को राह दिखाने का काम करेगा।

दुआ है कि अल्लाह तआला उसके वालिद मरहूम की तमाम दुआएं उसके हक़ में कुबूल फरमाए और उसको अपने वालिद से ज़्यादा इज्ज़त, महबूबियत और मक़बूलियत अता फरमाए, क्योंकि यही हर बाप की तमन्ना और यही हर बाप की आरजू होती है।

❖❖❖

दहेज लोभियों को सबक सिखाया बहादुर बेटियों ने

दहेज के बाद फेरे की बात पर भिजवाया जेल-

राजधानी के ग्रामीण इलाकों में दो बहादुर बेटियों ने दहेज लोभी ससुराल वालों को करारा जवाब दिया। उन्होंने शादी से इंकार कर दिया और मारपीट करने वाले वर पक्ष को पुलिस-पंचायत कर बिना दुल्हन के लौटने पर मजबूर कर दिया। पहली घटना बीकेटी के पहाड़पुर में हुई। यहां दूल्हे और उसके भाई ने इस बात पर हंगामा कर दिया कि एक तो दहेज कम मिल रहा है, उस पर इंतजाम भी नाकाफी है। इसको लेकर दोनों पक्षों में मारपीट भी हो गई। दूसरी ओर निगोहां के उतरावां गांव में दहेज के लिए दूल्हे के अड़ जाने पर युवती मंडप से उठ खड़ी हुई और शादी से इंकार कर दिया।

बीकेटी, लखनऊ के पहाड़पुर गांव में दहेज लोभियों को दुल्हन के साहसिक फैसले ने सबक सिखा दिया। लड़की वालों से मारपीट करने वाले बारातियों को उल्टे पांव भागना पड़ा। दूल्हा अपने भाइयों सहित हवालात पहुंच गया। एसओ विनोद यादव के साथ ही ग्रामीणों ने भी दुल्हन के फैसले को खूब सराहा।

पहाड़पुर गांव में भोंदू कश्यप की बेटी नीलम की सोमवार को शादी थी। रिश्ता डालीगंज में भांडूटोला निवासी रमेश के बेटे रवि से तय हुआ था। देर शाम को बारात भोंदू के दरवाजे पर पहुंची। नाच-गाना के बाद द्वारचार हुआ। रस्मों की तैयारी चल रही थी। ठीक से खातिदारी नहीं हो रही है। यह सुनते ही रवि बिफर पड़ा। वह मण्डप से उठ गया और लड़की वालों को बुलाकर आरोप लगाया कि एक तो दहेज में कमी, ऊपर से इंतजाम भी बेकार अब तो पूरा दहेज लेकर ही फेरे लूंगा।

दूल्हा मण्डप में था। उसका भाई विक्की व सौरभ दोस्तों के साथ मण्डप में पहुंच गए। उन्होंने दूल्हे का भड़काया कि जनवासे में बिजली पानी की व्यवस्था ठीक नहीं है,

दूल्हे के मुंह से ऐसे अल्फाज़ सुनकर लड़की के पिता व अन्य लोग मनाने में जुट गए। पर, रवि, उसके भाई व कुछ बाराती उलझ गए और गाली- गलौज शुरु कर दी। ऐतराज करने पर आरोपितों ने लड़की पक्ष के लोगों की पिटाई शुरु कर दी। पिटाई में भोंदू का हाथ फ्रैक्चर हो गया। बचाने में उनके भाई सुरेश, बेटे पवन व गुड्डू को भी गम्भीर चोटें लगीं।

मारपीट की सूचना पर एसओ पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पर, तब तक कई बाराती भाग चुके थे। पहले तो सुलह– समझौते की बात चलती रही। पर, ऐन मौके पर भोंदू की बेटी नीलम ने शादी से इन्कार कर दिया। भोंदू की तहरीर पर पुलिस ने रवि, उसके भाई विक्की और सौरभ को गिरफ्तार कर लिया।

पिता को गिड़गिडाते देख उठ खड़ी हुई बेटी–

निगोहां के उतरावां गांव में बहादुर बेटी ने दहेज लोभियों को करारा जवाब दिया। पिता को वर पक्ष के आगे गिड़गिड़ाते देख दुल्हन मण्डप से उठ गई और शादी से इनकार कर दिया। उसने वर पक्ष को खूब खरी–खोटी सुनाई और गिरेबान पकड़ कर दूल्हे को बाहर निकाल दिया। आक्रोशित घरातियों ने दूल्हे व उसके पिता की पिटाई कर दी। मंगलवार सुबह पुलिस–पंचायत ने सारा सामान वापस कराकर बारात लौटा दी। दुल्हन के इस साहसिक कदम को ग्रामीणों ने खुलकर सराहा।

उतरावां गांव निवासी किसान हरिओम ने अपनी बेटी रुचि (20) की शादी नगराम के देवी खेड़ा पतौना निवासी किसान मंझू के बेटे श्रवण के साथ तय की थी। 6 मई को तिलक व शादी का समारोह एक साथ होना था। तय कार्यक्रम के मुताबिक मंझू बेटे की बारात लेकर उतरावां गांव पहुंचा। वधू पक्ष के लोगों ने हैसियत अनुसार बारातियों का स्वागत–सत्कार किया।

पहले तिलक की रस्म पूरी की गई, जिसमें हरिओम ने 80 हजार रूपए नकद व नई मोटर साइकिल वर पक्ष को सौंप दी। ग्रामीणों के मुताबिक तिलक के समय ही मंझू ने अपने तेवर दिखाने शुरु कर दिए थे। वह एक लाख रूपए नकद की मांग पर अड़ा था। लड़की वालों की काफी मिन्नत करने पर वह किसी तरह राजी हुआ। जयमाल की रस्म के बाद फेरों की बारी आई।

सभी मण्डप के नीचे पहुंच गए। ग्रामीणों ने बताया कि फेरे शुरु होने ही वाले थे कि मंझू दहेज की मांग पर दुबारा अड़ गया। उसने बेटे को रुकने का इशारा किया और हरिओम से 50 हजार रूपए नकद देने को कहा। हरिओम उसे मानाने के लिए गिड़गिड़ाने लगे। पिता का बेइज्ज़त होता देख रुचि मण्डप से उठ गई। उसने श्रवण और मंझू को जमकर फटकारा और शादी से इनकार कर दिया। रुचि के तेवर देख घराती भी उग्र हो गए और दूल्हे की पिटाई कर दी।

मंगलवार 7 मई सुबह हरिओम ने निगोहां थाने में घटना की सूचना दी। पुलिस व पंचायत ने मिलकर वधु पक्ष को सारा सामान वापस कराया। हालांकि हरिओम मुकदमा दर्ज कराना चाहते थे। पर पुलिस ने सुलह कराकर पल्ला झाड़ लिया। बारात बैरंग वापस लौट गई।

परन्तु खेद है कि समाज में ऐसे साहसी योग्य दो बलवान न निकल सके जो उन बहादुर बेटियों को अपना जीवन साथी बनाने के लिए उसी वक्त तैयार हो जाते।

❖❖❖

कुर्आने हकीम-(एक नुस्ख़-ए-कीमिया)

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

इस दौर में जब कि बेशुमार दुनियावी और माद्दी तरक्कियां हुई हैं, हर तरह की ईजादात से दुनिया रुशिनास (अवगत) हुई है, ज़रूरत, बे ज़रूरत की चीज़ें आलमे वजूद में आई हैं, इस लिहाज़ से दुनिया अख़लाक़ी और दीनी हैसियत से पस्त से पस्त होती गई, इन सारी तरक्कियों के साथ इन्सान क़अरे मज़ल्लत (नीचता) में गिरता चला गया, उस खुदा को जो इस कायनात का ख़ालिक़ व मालिक़ है, भुला कर माद्दियत के बहाव में बह गया। मज़हब व अख़्लाक़ तो ख़ैर बुलन्द चीज़ें हैं इन्सानी मरतबे से गिर कर एक चौपाये से बदतर हो गया।

इन्सान दुनिया में क्यों आया? यह एक अहम सवाल है। यह सवाल ऐसा नहीं कि इसको नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए, यह सवाल एक ऐसा सवाल है जो हमारे ज़मीर (अंतरात्मा) को हमारे कल्ब को झिंझोड़ रहा है। सारी इन्सानियत को झिंझोड़ रहा है (कुर्आन में अल्लाह तआला ने फरमाया "मैंने तुम को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है") यह है इस अहम सवाल का जवाब जो दुनिया को मिला है। इस सवाल का जवाब जो इन्सानियत के पेशे नज़र है जो हर दिल व दिमाग़ के सामने है, हर उस इन्सान के सामने है जिसमें इन्सानियत की कोई रमक भी बाकी है। यह अल्लाह तआला का कलाम हमको हुक्म बताता है और इस बात को साफ करके बयान करता है कि इन्सान दुनिया में सिर्फ अल्लाह की इबादत के लिए आया है और बाकी तमाम चीज़ें दुनिया की आराइश व जेबाइश, उसकी नेमतें और तमाम मख़्लूक़ात यह सब इन्सान की ज़रूरियात पूरी करने के लिए हैं।

इन्सान की पैदाइश का अस्ल मक्सद यह है कि वह दुनिया में रहे, बस अपनी जाइज ज़रूरतों को पूरा करे और अपनी ज़िन्दगी अल्लाह तआला की इबादत में गुज़ार दे। इन्सान अपनी ज़िन्दगी को किस तरह इबादते इलाही में गुज़ारे? वह हर वक्त सज्दे में नहीं रह सकता, वह हर वक्त नमाज़ में नहीं रह सकता, वह तमाम ज़िन्दगी रोज़ा नहीं रख सकता, कितनी करीम है वह ज़ात, कितनी शफीक़ है वह ज़ात, जिसने ऐसा लाइह—ए—अमल (कार्य प्रणाली) अता किया कि अगर उस पर अमल किया जाए तो खाना पीना भी इबादत बन जाए, सोना जागना भी इबादत हो जाए, चलना फिरना इबादत बन जाए, खरीद व फरोख़्त भी इबादत में शुमार होने लगे, बात चीत भी इबादत में हो जाए ग़रज़ पूरी ज़िन्दगी इबादते इलाही

शेष पृष्ठ.....20 पर

—देवनागरी लिपि में उर्दू

मारक-ए-ईमान व माद्दीयत (ईमान और भौतिकता की लड़ाई)

—मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 —लिपिः मो0 मुहम्मदुल हसनी रह0

नोटः—यह लेख कुर्आने मजीद की सूर—ए—कहफ़ से मुतअ़ल्लिक़ है।

सूर-ए-कहफ़ से मेरा तआ़रूफ़ (परिचय)-

जुमे के रोज़ जिन सूरतों के पढ़ने का शुरु से मेरा मामूल रहा है उनमें सूर—ए—कहफ़ भी शामिल है। हदीसे नबवी के मुताले के दौरान मुझे इल्म हुआ कि उस में सूर—ए—कहफ़ पढ़ने और उसको याद करने की तरग़ीब दी गई है और उसको दज्जाल से हिफाजत का ज़रीया बताया गया है। मैंने अपने दिल में सोचा कि क्या इस सूरे में वाक़ई ऐसे मआनी व ह़क़ाइक़ (वास्तविकताएं) और ऐसी तंबीहें (चेतावनी) या तदबीरें (उपाय) हैं जो उस फित्ने से बचा सकती हैं जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद बार बार पनाह मांगी है और अपनी उम्मत को भी उससे पनाह मांगने की सख़्त ताकीद फरमाई है और जो वह सबसे बड़ा आखिरी फित्ना है जिस के बारे में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद यह है कि "आदम की पैदाइश से किंयामे कियामत तक दज्जाल से बड़ा कोई फित्ना नहीं है।

मैंने सोचा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो किताबुल्लाह और उसके असरार व उलूम से सबसे ज़्यादा वाकिफ थे कुर्आन की सारी सूरतों में आखिर इसी सूरे का इन्तिख़ाब क्यों फरमाया।

अ़हदे आखिर के फित्नों से सूर-ए-कहफ़ का तअल्लुक़-

मुझे महसूस हुआ कि मेरा दिल इस राज़ तक पहुंचने के लिए बेताब है, मैं यह जानना चाहता था कि इस खुसूसियत का सबब क्या है? और उस हिफाजत और बचाव का जिस की खबर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है सूरे से क्या मानवी तअ़ल्लुक है?

कुर्आने मजीद में छोटी बड़ी (किसारे मुफस्सल और तिवाले मुफस्सल) हर तरह की सूरतें मौजूद थीं कया वजह है कि उन सब को छोड़ कर इस सूरे का इन्तिखाब किया गया और यह जबरदस्त खासियत सिर्फ इसी सूरे में रखी गई।

मुजमलन (संक्षेप में) मुझे इस का यकीन हो गया कि यह सूरे कुर्आन की ज़रूर ऐसी मुन्फरिद (अद्वतीय) सूरे है जिसमें अहदे आखिर (अन्तिम काल) के उन तमाम फित्नों से बचाव का सबसे ज़्यादा सामान है जिस का सब से बड़ा अलम बरदार (झण्डा उठाने वाला) दज्जाल होगा, इसमें उस तिरयाक़ का सबसे बड़ा ज़खीरा है जो दज्जाल के पैदा करदा ज़हरीले असरात का तोड़ कर सकता

है और उसके बीमार को मुकम्मल तौर पर शिफा याब (स्वस्थ) कर सकता है और अगर कोई इस सूरे से पूरा तअल्लुक पैदा करले और उसके मआनी (अर्थ) को अपने ज़ान व दिल में उतार ले (जिसका रास्ता इस सूरे का हिफ्ज़ और कसरते तिलावत है) तो वह उस अजीम और कियामत खेज फित्ने से महफूज़ रहेग। और उसके जाल में हरगिज़ गिरिफ्तार न होगा।

इस सूरे में ऐसी रहनुमाई वाजेह (स्पष्ट) इशारे बल्कि ऐसी मिसालें और तस्वीरें मौजूद हैं जो हर अहद में और हर जगह दज्जाल को नामजद कर सकती हैं और उस बुनियाद से आगाह कर सकती हैं जिस पर उस का फित्ना और उसकी दावत व तहरीक़ काइम है, मजीद बरआँ यह कि यह सूरा ज़ेहन व दिमाग़ को दज्जाल के फित्ने के मुकाबले के लिए तैयार करती है और उसके खिलाफ बगावत पर उक्साती है, इस में एक ऐसी रूह और स्पृट है की दज्जालियत और उसके अलमबरदारों के तर्जे फिक्र और तरीक–ए–जिन्दगी की बड़ी वजाहत और कूवत के साथ नफी करती है (नकारती है) और उस पर सख़्त ज़र्व (चोट) लगाती है।

सूरे का सिर्फ एक मौजूअ़ है–

इजमाली तौर पर इस जेहन व ख़्याल को लेकर मैं इस सूरे की तरफ इस तरह मुतवज्जेह हुआ जैसे वह मेरे लिए बिल्कुल नई है, मैं यह चिराग़ (यानी इस सूरे के मुतअ़ल्लिक मेरे इब्तिदाई ज़ेहनी नुकूश) लेकर उसके मज़ामीन व मुशतमिलात की जुस्तुजू में निकल पड़ा, उस वक्त मैं ने महसूस किया कि वह मआनी व हक़ाइक़ (अर्थ तथा वास्तविकताएं) का एक नया आ़लम (जगत) है जिससे मैं अब तक ना आशना (अपरिचित) था, मैंने देखा कि पूरी सूरे सिर्फ एक मौजूअ़ (विषय) पर मुशतमिल है जिस को मैं "ईमान व माद्दीयत की कश मकश" या गैबी कूवत और आलमे अस्बाब से ताबीर कर सकता हूँ इसमें जितने इशारे, हिकायात व वाकिआत और मवाइज़ (नसीहतें) और तमसीलें गुज़री हैं वह सब उन्हीं मआनी की तरफ़ इशारा करती हैं। कभी खुल कर कभी दर पर्दा।

मुझे इस नई दर्याफ़्त या नई फ़त्ह से बड़ी मुसर्रत हासिल हुई, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूव्वत और कुर्आने मजीद के एजाज़ का एक नया पहलू मेरे सामने आया मुझे इस का अन्दाज़ा न था कि यह किताब जो छटी सदी इस्वी में (यानी आज से चौदह सौ साल से भी ज़्यादा पहले) नाजिल हुई इस दज्जाली तमद्दुन व तहजीब की (जो सत्तरहवीं सदी इस्वी में पैदा हुई और परवान चढ़ी और बीस्वीं सदी में पक कर तैयार हुई, मुराद है मगरिबी फिक्र की मआद्दा परस्ती की तहरीक़) नीज़ उसके नुक्त–ए–उरूज (उन्नतिबिन्दु) और इख्तिताम और उसके रहबरे आज़म की (जिसको नुबूव्वत की ज़बान में "दज्जाल" कहा गया है) ऐसी सच्ची और बोलती हुई तस्वीर इन्सानों के सामने पेश कर देगी।

आज से तकरीबन 25 साल क़ब्ल जब मैं दारुल उलूम

नदवतुल उलमा में उस्तादे तफ्सीर था यह मजामीन व मआनी एक मकाले की शक्ल में मेरे कलम से निकले और रिसाला "तर्जुमानुल कुर्आन" में शाये हुए जो उस ज़माने में मौलाना सय्यिद अबुल आला मौदूदी की इबारत में हैदराबाद से निकलता था, उसी ज़माने में मुझे मौलाना सय्यद मनाज़िर अहसन गीलानी रह0 के यहाँ जो उस वक्त जामिया उस्मानिया में शोब–ए– दीन्यात के सद्र थे कियाम का मौक़ा मिला यह सन् 1366 हि0 (1996 ई0) की बात है, मेरा हर रात को मौलाना से इल्मी मुज़ाकरा होता उन्होंने जिक्र किया कि यह मुख़्तसर मजमून उनकी नज़र से गुज़रा है साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि वह खुद इस मौज़ूअ़ (विषय) पर (हस्बे मामूल) बहुत तफ्सील के साथ लिख रहे हैं और उसको इशाअ़त के लिए अल फुरकान को भेजेंगे, मौलाना के इन्तिकाल के मौके पर जब अलफुरकान का ज़खीम नम्बर शाये हुआ तो यह तवील मकाला पूरा उसमें शामिल था। उस मकाले में जो इतने ज़माने के बाद शाये हुआ इस सूरे पर दो बारा गौर करने और कुछ लिखने की तहरीक पैदा करदी और यह सवाल हुआ कि इस अजीम और अहम सूरे का अहद आखिर के फित्नों, तहरीकों, दावतों, फलसफों फिक्री रुझानात और खास तौर पर दज्जाली फित्ने से जो तअल्लुक है उस पर रोशनी डाली जाए और उसके अन्दर जो इबरतें, अस्बाक़, निशनियाँ और अ़लामात पोशीदा हैं उनकी तरफ तवज्जुह दिलाई जाय चुनांचे इस सिलसिले में जो कुछ अल्लाह तआला ने मेरे दिल में डाला मैंने उसको कलम बन्द करना शुरु किया, मौलाना गीलानी (जिन की बा काइदा शागिर्दी की सआदत से मैं महरूम रहा लेकिन उनको अपने असातिज़ा व शुयूख में समझता रहा और वह भी हमेशा मुझे अपना एक अजीज़ भाई समझते रहे और बहुत शफ़्क़त व तअल्लुक का मुआमला फरमाते रहे) से इस मकाले में इल्मी नुकात बलीग़ इशारात और लताइफे कुर्आनिया का जो कीमती जखीरा था उस से मुझे बड़ी मदद मिली इस सूरे के बारे में जो कुछ आगे आएगा वह मुफस्सरीन के मखसूस तरीके पर नहीं लिखा गया है बल्कि सिर्फ तअस्सुरात और वारदात का मुरक्कअ़ और सूर–ए–कहफ का एक उमूमी और उसूली जाइज़ा है।

जारी.....

❖❖❖

कुर्आने करीम.....

का दूसरा नाम हो जाए। यह लइह–ए–अमल क्या है ऐसी अज़ीम नेमत जिस के सामने दुनिया की तमाम नेमतें हेच हैं क्या है? यह नुस्ख़–ए–कीमिया क्या है? यह है ज़िकरे इलाही कुर्आन हकीम जो रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए से हम तक पहुंचा, निछावर हों हमारे माँ बाप आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, अल्लाह तआला हम सब को इस पर अमल करने की तौफीक़ अता फरमाए।

आमीन!

❑❑

ईमान वालों की तलाश

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी अनु0— नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

मौलाना मनाज़िर अहसन का किस्सा —

मौलाना मनाज़िर अहसन रह0 का किस्सा है, एक किताब पढ़ रहा था, उनके हालात लिखे हुए थे। उसमें लिखा था कि मौलाना रह0 को मौत का बड़ा शौक था और ये शौक आख़िर में इतना बढ़ गया कि कहा करते जन्नत में जवान होकर जाऊँगा, और इस बात को बहुत ज़ोर–ज़ोर से कहा करते। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बूढ़ी औरत से मज़ाक में कहा था। किस्सा ये हैं कि एक बूढ़ी महिला आपके पास आई और जन्नत के बारे में पूछने लगी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, बूढ़ी औरत जन्नत में नहीं जाएगी। ये सुनकर वह बूढ़ी बेचारी रोने लगी कि मैं तो बूढ़ी हो गई हूँ, मैं जन्नत में नहीं जाऊँगी। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, बूढ़ी जाएगी लेकिन जवान हो कर जाएगी। कुर्आन में है "हम बूढ़ी औरतों को बिल्कुल जवान बना देंगे। एक दम नव युवती। तो मौलाना पर इसका विशेष प्रभाव था। एक दम देहात में रहते थे। उनके चाहने वालों ने लिखा है कि उनको मौत का इतना शौक था कि ज़ोर–ज़ोर से कहते कि जन्नत में जवान होकर जाऊँगा, मज़ा आएगा। अंत में चादर ओढ़ कर लेटे और देहांत हो गया। सुबह हुई तो जिसने भी चादर उठाई सबने देखा की दाढ़ी बिल्कुल काली, गाल भरे हुए, पच्चीस साल के नवजवान मालूम हो रहे थे। ये अल्लाह दिखा भी देता है कि उनको बहुत शौक था। अल्लाह ने उनके शौक की लाज रखी और दुनिया में दिखा दिया कि देखो! मेरे बन्दे ऐसे होते हैं। जन्नत में जाने से पहले ही जवान हो गए। अभी जन्नत में पहुंचे भी नहीं, मगर जवानी का आलम तारी हो गया। ये है वह चीज़ जो हमें करनी चाहिए।

नेक अमल करने का शौक खत्म हो गया —

लेकिन आज हमारे मुहल्ले में, हमारे घरों में हालत क्या है? चरित्र (सीरत) बनाने का और अपने को अच्छे अमल के साथ जोड़ने का शौक ही खत्म हो गया। अब तो केवल मोबाइल है और मोबाइल की तस्वीरें हैं। गन्दगी है और गन्दगी की छीटें हैं। चहुंओर उसी का चर्चा है, उसी का शौक है। यहां की बूढ़े लोग उसमें डूबे हैं।

एक किताब छपी है, जिसमें एक बहुत खतरनाक चीज़ है। एक डॉक्टर साहब हैं, जिनकी ड्यूटी ICU में है। दीनादार आदमी हैं। उन्होंने इसमें चौंका देने वाली बात लिखी है। उन्होंने बताया कि मैंने ICU में सैंकड़ों आदमियों को दम तोड़ते हुए देखा है, लेकिन बात बहुत अफसोस की कहने जा रहा

हूँ कि इस ICU में मेरे सामने यदि एक सौ आदमी की मौत हुई है तो उन एक सौ में केवल दो या तीन को कल्मा पढ़ने का सौभाग्य मिला। शेष या तो गणित–गुणा करते हुए मरे या टी0वी0 देखते हुए मरे हैं। ICU में भी टी0वी0 लगवा लेते हैं। वहां लेटे–लेटे देख रहे हैं। मौत आई उसी गन्दी फिल्मों के साथ या हिसाब–किताब करते हुए। लेकिन कल्मा के साथ दो–तीन को ही मौत आई। वहां तो सब मुसलमान हैं, यहां क्या स्थिति है? कोई चेक करने वाला नहीं। यहां घरों में देखें कि क्या हाल है? कितनी खतरनाक बात है और मुसलमानों के लिए सबसे आखिरी दरजा। सबसे उम्दा मकाम यही आखिरी होता है। अगर ईमान पर खात्मा हो गया तो कोई समस्या ही नहीं, न रोने की ज़रूरत न कोई परेशानी।

हज़रत शाह अलमुल्लाह का किस्सा –

हज़रत शाह अलमुल्लाह रह0 बड़े अल्लाह वाले सुन्नत पर अमल करने वाले बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनके चार बेटे थे। खबर आई कि एक बेटे का देहान्त हो गया। उस समय वह कक्षा में पढ़ा रहे थे। जब पढ़ा लिया तो घर गए फिर बाहर आए और आकर कहने लगे, उनके बेटे का नाम अबू हनीफा था, जवान थे, कहने लगे मियाँ! अबू हनीफा का इन्तेक़ाल हो गया, यदि इसको लोग बुरा न समझते तो मैं मिठाई बंटवाता। इसलिए कि अबू हनीफा का निधन ईमान के साथ हुआ, इसलिए मुझे खुशी है कि अल्लाह ने ईमान के साथ बुलाया। इन्शाअल्लाह जन्नत में मुलाक़ात होगी। तो उन्होंने कहा कि मैं मिठाई बांटता। लेकिन ये उचित नही है और ये भी कि इस्लाम के विरुद्ध है। इसलिए बहरहाल दुख तो होगा ही और ये मना भी नहीं किया गया। दुख तो प्राकृतिक है। सम्बन्ध रखने वालों को दुख तो होता ही है। लेकिन एक सीमा है। एक समय निर्धारित है, लेकिन सीमा की भी एक सीमा होती है। लेकिन यहां तो जैसे हज़रत हुसैन रज़ि0 का मातम जिसकी हद की भी कोई हद नहीं है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन दिन से अधिक शोक मनाने को मना कर दिया। अरबों में तो अभी भी यह हाल है कि तीन दिन से अधिक शोक नहीं मनाया जाता। अर्थात मौत से सबसे अधिक डरने वाली कौम हिन्दुस्तानी है। जहां तक मैं समझता हूं कि यहां तो मौत के नाम से मौत होती है। इसी कारण लखनऊ आदि में बड़ा चलन था। मौत का लफ्ज़ भी इस्तेमाल नहीं करते थे। कहते थे कि हुज़ूर पर्दा फरमा गए। हुज़ूर से अब मुलाक़ात नहीं होगी। ये सब शियों से आया है। ये ईमान वालों का ढंग नहीं है। अरबी में तो अल्लाह के रसूल के लिए भी मौत का लफ्ज़ आया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से जाने के बाद हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहा "जो लोग मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इबादत करते थे, उनको मालूम हो जाना चाहिए कि

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मौत हो गई और जो अल्लाह की इबादत करता था तो अल्लाह ज़िन्दा है उसको मौत नहीं आ सकती। ये हज़रत अबू बक्र का आखिरी जुम्ला है। तो अरब के यहां आज भी मौत से घबराहट नहीं है। तीन दिन का शोक उनके यहां आज भी होता है। तीन दिन के बाद यदि कोई पूछने आता है तो कहते हैं कि वह तो जा चुके, इसमें क्या बात है? इन्शाअल्लाह अच्छा ही होगा। अब क्या पूछ रहे हो? जाओ अपना काम करो।

हमारे यहां जो लोग वहां काम करते हैं, उनके साथ बड़े लतीफे पेश आते हैं। एक सज्जन के किसी करीबीका निधन हो गया। तीन दिन के बाद छुट्टी मांगने आये तो अरब ने हंसकर कहा, क्या करने जाओगे वहां, यहीं रहकर उनके लिए बाख़्शिश की दुआ करो। कहने लगे कि नहीं हमें तो जाना है। अरब ने कहा क्या करोगे वहां जाकर मुर्दे को ज़िन्दा कर लोगे? तीन दिन हो गये। ये अरबों का मिजाज़ है, और ये इस्लामी मिजाज़ है। मौत अपने चाहने वालों को आती है। इसमें डर की क्या बात है? लेकिन बात वही है, हमारे हालात इतने ख़राब हैं कि क्या करे? डरना ही चाहिए। हमारी स्थिति इस लायक नहीं है कि हम वहां जा सकें, इसलिए हमको डर लगता है। ईमान वाले का ये मामला होना चाहिए कि उसको न डर हो न खौफ हो।

एक लतीफा –

एक लतीफा याद आया कि 10 मुहर्रम को हर जगह गमे हुसैन मनाया जाता है। अरब देशों में माशा अल्लाह ऐसा नहीं है। सीरिया से एक सज्जन यहां आए तो मातम चल रहा था। उन्होंने पूछा, क्या चल रहा है? तो लोगों ने कहा, हज़रत हुसैन रज़ि0 का ग़म मनाया जा रहा है। तो वह कहने लगे, क्या भारत में चौदह सौ साल बाद ख़बर पहुंची है? तो ज़ाहिर है कि ये सब चीज़ें बेवकूफी, मूर्खता की हैं और अज्ञानता की भी हैं। वह कुछ जानते नहीं हैं।

शेष पृष्ठ..... 28 पर

दुआए मग़फिरत

हमारे दफ्तर के अहम कारकुन जनाब नियाज़ अहमद साहब की वालिदा का 30 अप्रैल 2013 को इन्तिक़ाल हो गया इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। पाठकों से अनुरोध है कि मरहूमा की मग़फिरत के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला हमारे नियाज़ अहमद साहब को सब्र अता फरमाये और मरहूमा को जन्नत में जगह दे। आमीन

सम्पादक

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

बच्चे का जन्म और उसके कानों में अज़ान[1] और अक़ामत[2]—

किसी मुसलमान के घर में जब कोई बच्चा पैदा होता है, तो सर्वप्रथम परिवार अथवा मुहल्ले के किसी नेक आदमी या खानदान के बड़े—बूढ़े के पास लाते हैं, वह उसके दाहिने कान में अज़ान तथा बायें कान में अक़ामत कहता है। वह अज़ान एवं अक़ामत नमाज़ का एक आवश्यक अंग है और बच्चा नमाज़ तो क्या अज़ान एवं अक़ामत का अर्थ एवं उद्देश्य भी नहीं समझता, सम्भवतः इसका उद्देश्य यह होता हे कि सब से पहले उसके कान में अल्लाह का नाम और उसकी इबादत की पुकार पड़े। ऐसे अवसर पर सिकी महा पुरुष द्वारा चबाये हुए खजूर या छुहारे का एक अंश बरकत के लिए मुंह में देने का भी रिवाज़ है। यह बात खुदा के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के व्यावहारिक जीवन से भी साबित है और यह सुन्नत[1] वहीं से चली आ रही है।

हिन्दुस्तानी मुसलमानों के यहां अपनी अपनी हैसियत एवं क्षमतानुसार बच्चे के जन्म पर बधाई देने और सगे सम्बन्धियों द्वारा अपने हर्ष एवं प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिए वे तरीक़े भी प्रचलित हैं जो किसी हद तक स्वाभाविक होने के साथ सम्भवतः हिन्दुस्तान के रीति रिवाज से लिए गये हैं। इसलिए अन्य देशों और अरब में इसका दस्तूर नहीं देखा। यथा—कुर्ता टोपी भेजना, इस बारे में भारत के राज्यों एवं क्षेत्रों में विभिन्न तौर तरीक़े प्रचलित हैं।

बच्चे का अक़ीक़ा और उसका तरीक़ा—

जन्म के सातवें दिन बच्चे का अक़ीका (मुंडन) करना मुस्तहब है, किसी कारणवश यदि सातवें दिन न हो सके तो चौदहवें दिन और इसी हिसाब से बाद में होता है। यदि बच्चा है तो दो बकरे और अगर बच्ची है तो एक बकरा ज़िबह किया जाता है और उसका गोश्त ग़रीबों तथा रिश्तेदारों को बाँटा जाता है तथा घर में भी पका कर खाया और खिलाया जाता है। परन्तु

---

1. दिन में पांच बार प्रत्येक मस्जिद में नमाज की ओर ध्यान आकृष्ट करने हेतु अज़ान दी जाती है, जिसके शब्द अर्थ निम्नांकित हैं—

अल्लाहु अकबर— चार बार (अल्लाह सर्व महान है), अशहदु—अल—ला—इलाह—इल्लल्लाह— दो बार (मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई भी उपास्य नहीं) अशहदु—अन्न—मुहम्मदर्रसूलुल्लाह— दो बार (मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि—व—सल्लम अल्लाह के रसूल हैं)।

हय्या—अलस्सलाह— दो बार (नमाज़ की ओर आओ), हय्या—अलल—फलाह— दो बार (कामयाबी की ओर आओ) अल्लहु अकबर, अल्लहु अकबर, ला इलाह इल्लल्लाह।

2. नमाज़ आरम्भ होने के तुरन्त पूर्व अक़ामत कही जाती है। अज़ान के शब्दों में "हय्या—अलल—फलाह के बाद दो बार "क़द—क़ा मतिस्सलाह" निः सन्देह नमाज़ खड़ी हो गई) शब्द अधिक कहे जाते हैं।

1. खुदा पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के जीवन की समस्त क्रियाओं तथा कथनांकों को सुन्नत कहते हैं

अक़ीक़ा इस्लामी शास्त्रानुसार न फ़र्ज़ है और न वाजिब है, और न इन पशुओं का ज़िबह करना। यदि किसी में इतना सामर्थ्य नहीं तो अनिवार्य भी नहीं है।

अक़ीके का तरीक़ा हिन्दुस्तानी मुसलमानों में सामान्यतः इस प्रकार प्रचलित है कि घर की हैसियत के अनुसार सगे–सम्बन्धी तथा मित्रगण एकत्र होत हैं, नाई बुलाया जाता है और वह बच्चे के बाल मूंड देता है, इस अवसर पर बालों की तौल के बराबर चाँदी या उसके मूल्य के बराबर धनराशि ग़रीबों में बाँट दी जाती है, और यह क्रिया सुन्नत है। अनेक बिरादरियों में नाई को (जो परजे की हैसियत से खानदानों मे बटे और इस प्रकार की सेवा के लिए बंशानुक्रमिक रूप से नियुक्त होते हैं) निकट सगे सम्बन्धी कुछ नकद राशि के रूप में देते हैं, और इस प्रकार के लोगों की (जो निर्धारित रूप से वेतन तथा अपने काम की मज़दूरी नहीं पाते) आय का एक बड़ा साधन है।

बच्चे का नाम और उसमें इस्लामियत की झलक–

सामान्य रूप से ऐसे ही अक़ीक़े के अवसर पर बच्चे के नाम का एलान कर दिया जाता है। बहुधा खानदान के किसी बड़े बूढ़े या मुहल्ले अथवा मस्जिद के किसी विद्वान और नेक आदमी से नामकरण कराया जाता है, या स्वयं माँ–बाप या उनके बड़े अपनी पसन्द के किसी नाम का चयन कर लेते हैं। नाम रखने में हिन्दुस्तानी मुसलमान प्रायः अरबी ढंग के नामों को प्राथमिकता देते हैं। हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने संसार के अन्य देशों के मुसलमानों की भांति इस बात का पालन किया है कि बच्चों के नाम से इस्लामी रंग झलकता हो और नाम ही से समझ लिया जाय कि वह मुसलमान है। मुस्लिम विद्वान इसके अनेक मनोवैज्ञानिक (Psychological) लाभ बताते हैं और अनेक ऐसे देशों जैसे चीन आदि का उदाहरण देकर उपर्युक्त नाम करण विधि के पालन के महत्व पर बल देते हैं, जहां नाम से यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि अमुक व्यक्ति मुसलमान है अथवा ग़ैर मुस्लिम। जहां तक इस्लामी शरीअत का सम्बन्ध है, इस बारे में शरीअत ने वैधानिक रूप से मुसलमानों को विशिष्ट नामों का पाबन्द नहीं किया है, इस विषय में केवल इतना मार्गदर्शन किया है कि अच्छे नाम वह हैं जिस से खुदा की बन्दगी (तौहीद) का प्रदर्शन हो। अतः हिन्दुस्तान सहित संसार के समस्त देशों में मुसलमानों के अधिकांश नाम वह हैं जो अब्द (बन्दा) से आरम्भ होते हैं। यथा अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अब्दुल वाहिद, अब्दुल अहद, अब्दुस्समद, अब्दुल अज़ीज़, अब्दुल माजिद, अब्दुल मजीद आदि। यह भी ज़रूरी कर दिया गया किनाम से शिर्क, अभिमान एवं अहंकार तथा अवज्ञा का प्रदर्शन न होता हो, इसी कारणवश मलिकुलमुलूक और शहंशाह के समान शब्दों को ना पसन्द किया गया है।

❖❖❖

रमज़ानुल मुबारक

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

ख़ुश किस्मत हैं आप और हम सब कि रमज़ान शरीफ का मुबारक महीना अल्लाह के फ़ज़्ल से फिर नसीब हुआ। अल्लाह का ख़ास फज़्ल है उन सब हज़रात पर जिन को कोई उज़्र नहीं और वह रोज़ा रख कर अल्लाह के फर्ज को पूरा करके बे हिसाब सवाब हासिल करेंगे और आखिरत की ज़िन्दगी में इस का भर पूर बदला लेंगे।

रमज़ान के रोज़े हर आकिल बालिग़ मुसलमान पर अल्लाह तआला ने फर्ज़ फरमाए हैं लिहाज़ा हर बालिग मुसलमान को रोजा ज़रूर रखना चाहिए किसी शरई उज़्र के बग़ैर रोज़ा छोड़ने में बड़ा गुनाह होगा जो न तौबा व इस्तिग़फार से मुआफ होगा न सदक़ा व ख़ैरात से उसकी सज़ा तो भुगतना ही होगी सिवा इसके कि अल्लाह तआला का खास करम हो जाए अल्लाह तआला रोज़ा छोड़ने के गुनाह और उसकी सज़ा से बचाये।

मालूम होना चाहिए कि छूटे हुए रोजे जो दूसरे दिनों में रखे जाएंगे उन का वह सवाब न मिलेगा जो रमज़ान में रोज़ा रखने का मिलता है बल्कि कोई शख़्स अगर ज़िन्दगी भर रोज़ा रखे (गैर रमज़ान में) तो भी रमज़ान के रोज़े के बराबर सवाब न पाएगा यह बात अलग है कि रमज़ान के छूटे हुए रोज़े पर जो पकड़ होती जो सजा मिलती वह दूसरे दिनों में रोज़ा रख लेने से न मिलेगी।

रमजानुल मुबारक में जहां फराइज़ की अदायगी पर सत्तर गुना मिलता है वहीं रमजानुल मुबारक में नफ़्ल इबादतों का सवाब फर्जों के बराबर मिलता है इसी लिए जिन को अल्लाह ने माल दे रखा है वह रमजानुल मुबारक में अपनी वुसअ़त के मुताबिक खूब खैरात करते हैं और अपने माल की ज़कात रमज़ान में निकाल कर सत्तर गुना सवाब लेते हैं।

इसमें शक नहीं कि इस साल रमज़ान जूलाई में पड़ रहा है जिसमें दिन भी बड़ा होता है और धूप भी होती है ऐसे में मजदूर तब्के की आज़माइश होती है लेकिन हिम्मत करने वालों की अल्लाह मदद फरमाता है। जूलाई में बारिश हो जाती है किसानों को खेत में काम करना होता है, लेकिन मैं देहात का रहने वाला हूं, और किसान घर का हूं मैंने देखा है कि खेतों में काम करने वालों ने हिम्मत की तो रोज़ा रखा मैं ने खुद खेत में काम करके रोज़ा रखा है। लिहाज़ा मेहनत करने वालों को हिम्मत न हारना चाहिए अल्लाह उनकी मदद करेगा फिर भी अगर कोई मेहनत करने वाला भाई रोज़ा न रख सके तो उसको चाहिए कि छूटे हुए रोज़े और दिनों में पूरे कर ले। जो बहन बेटियाँ हम्ल से हों और उनको खतरा हो कि रोजा रखने से उनको नुक्सान पहुंच सकता है और इस उज़्र से वह रोज़ा छोड़ बैठें तो उनको चाहिए कि बाद में छूटे हुए रोज़े पूरे

कर लें इसी तरह जिन बहन बेटियों की गोद में बच्चा हो और वह उसे दूध पिलाती हों और उनको खतरा हो कि रोजा रखने से दूध कम हो जाएगा इस उज्र से अगर वह रोजा न रख सकें तो दूसरे दिनों में पूरे कर लें।

कुछ पैसे वाले रोज़े की मशक्कत से बचने के लिए रोज़े का फिदया देकर रोज़ा नहीं रखते यह बिल्कुल गलत है आप मुफ़्ती हज़रात से मालूम करलें फिदया ऐसे मालदार मरीज़ की जानिब से दिया जा सकता है जिसके मरज़ के ठीक होने की उम्मीद नहीं फिर भी फिदया देने के बाद अगर मरीज़ सिहत पा गया तो उसका फिदया खैरात हो जाएगा। और रोज़ा रखना होगा, लिहाज़ा अगर किसी मरज़ के सबब रोज़ा न रख सके तो फिदया न दे अच्छा होने पर रोज़े पूरे करें। जो लोग शूगर के मरज में बहुत ज़्यादा मुतअस्सिर होते हैं वह इस हाल में रोज़ा नहीं रख सकते वह फिदया दे सकते हैं लेकिन उनको याद रखना चाहिए कि अगर अल्लाह ने उनको सिहतयाब कर दिया तो छूटे हुए रोज़ों का बदल करना होगा यानी रोजा रखना होगा।

बाज भाई बहनें रोज़े की हालत में अपने छोटों पर, गुस्सा गर्मी दिखाते हैं, उनको पहले से तैयार रहना चाहिए कि वह रमज़ान में अपने छोटों पर और दिनों से ज़्यादा नर्मी करेंगे। जिस तरह रमज़ान में नेकियों का सवाब बढ़ जाता है उस का उल्टा रमज़ान में गुनाह बहुत सख़्त समझे जाते हैं लिहाज़ा गुनाहों से तो हमेशा बचें मगर रमज़ान में ज़्यादा एहतियात करें कि गुनाह न होने पाएं, बड़ा खतरनाक गुनाह जो मुआशरे में रवाज पाये हुए है वह गीबत है, गीबत बड़ा गुनाह है और वह हक्कुल इबाद भी है जिस की गीबत की गई है जब तक वह मुआफ न करे मुआफ न होगा लिहाज़ा गीबत से बचने की बड़ी कोशिश हो। गीबत यह है कि किसी की गैरमौजूदगी में उसकी बुराई बयान करना, कुछ लोग कह बैठते हैं कि जो कुछ मैंने बयान किया वह सच है वह ऐब उसमें मौजूद है, उन्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद फरमा दिया है कि अपने भाई की गैर मौजूदगी में उसका सही ऐब बयान करना ही गीबत है अगर वह ऐब उस में नहीं है तब तो ग़ीबत से बड़ा गुनाह बुहतान होगा।

(यह एक हदीस का मफहूम है)

रमज़ान में अल्लाह ने बे हिसाब सवाब के ज़राए बताए हैं उनहीं में सहरी खाना भी है और इफ़्तार में किसी भाई को शरीक करना भी है, अल्लाह तआला तौफ़ीक से नवाज़े।

रमज़ान में अल्लाह की एक देन तराबीह की नमाज़ है वह इशा के फर्जों ओर दो सुन्नतों के बाद पढ़ी जाती है, उम्मत का बड़ा तबक़ा तराबीह की बीस रकअ़तें पढ़ता है, मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में भी बीस रकअ़तें तरावीह की पढ़ी जाती हैं आप भी बीस रकअ़तें पढ़ें अहले हदीस हज़रात आठ रकअ़त तरावीह पढ़ते हैं अगर

आपके यहाँ अहले हदीस हैं और वह आठ रकअत पढ़ते हैं तो उनसे झगड़ने की ज़रूरत नहीं अलबत्ता उनको भी चाहिए कि वह भी बीस रकअत पढ़ने वालों को ग़लत न बताएं न उनको आठ रकअत पढ़ने पर आमादा करें, आपस में इत्तिहाद व इत्तिफ़क़ को जरूरी जानें। तरावी में जहाँ तक मुमकिन हो एक कुर्आन मजीद के खत्म का एहतिमाम करें लेकिन अगर इसका इन्तिज़ाम न हो सके तो तरावीह हरगिज न छोड़ें।

तरावीह हमारी बहन बेटियां भी घरों में पढ़ने का एहतिमाम करें अल्लाह तआला तौफीक़ से नवाज़े।

रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह की एक बड़ी देन एतिक़ाफ की इबादत है, जिसको अल्लाह तौफीक़ दे 20 रमजामन की मग़रिब की नमाज़ से पहले एतिकाफ की नीयत से मस्जिद में दाखिल हो और फिर ईद का चाँद दिख जाने पर ही मस्जिद से निकले, मस्जिद में पूरा वक़्त इबादत में गुज़ारें, फर्ज़ नमाज़ें तो जमाअत से पढ़ेंगे ही नफ़्ल नमाज़ें भी पढ़ने का एहतिमाम करें तिलावत व ज़िक्र में वक्त गुज़ारें नींद आने पर सोना भी इबादत में शुमार होगा, रमज़ान के आखिरी अशरे में एक रात आती है उसे लैलतुल क़द्र कहते हैं, यह रात अपनी कीमत के एतिबार से हज़ार महीनों से बढ़ कर है और रिवायात से मालूम होता है कि यह आखिरी अशरे की ताक रातों में कोई एक रात होती है, लिहाज़ा ताक़ रातों में अपनी ताक़त भर रात जाग कर इबादत व दुआ में लगाना चाहिए। जो शख़्स एतिकाफ़ करता है उसको इसका खूब मौक़ा मिलता है। याद रहे एतिकाफ़ करने वाला पाखाना पेशाब, गुस्ल जैसी ज़रूरतों के बग़ैर मस्जिद से बाहर निकलेगा तो उसका एतिकाफ़ टूट जाएगा। और अगले रमज़ान में उस की कज़ा ज़रूरी होगी।

अल्लाह की किताब कुर्आन शरीफ रमज़ान ही में नाजिल हुई है इसलिए रमज़ान में तिलावत का खास एहतिमाम करना चाहिए। कुछ भाई ऐसे भी हैं जो कुर्आन शरीफ़ नहीं पढ़े हैं उनको बताना चाहिए कि वह जो सूरतें नमाज़ में पढ़ने के लिए याद किये हुए हैं। उनको बार बार पढ़ें। रमजान शरीफ में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भी खूब खूब पढ़ना चाहिए, अल्लाह तआला तौफ़ीक़ से नवाज़े।

❖❖❖

ईमान वालों की तलाश.....

न कुर्आन जानते हैं न हदीस जानते हैं, न हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जानते हैं और न अहले बैत (आप सल्ल0 के घराने वाले) को जानते हैं। अहले बैत कभी ऐसा कर ही नहीं सकते थे। अहले बैत संयम की प्रतिमूर्ति थे कि उनके यहां मातम करना और सीना पीटना साबित ही नहीं है। लेकिन बहरहाल सब हो रहा है और सब उन्हीं के नाम पर हो रहा है। आजकल Lable बड़ा ऊँचा होता है और Poster बड़ा शानदार, और दुकान का Signboard बड़ा शानदार, लेकिन अन्दर कुछ भी नहीं। ❑❑

आने वाली नस्ल और .....

कुछ इलाकों में दिन के औकात में मकतबों में बच्चों की काफी तादाद होती है मगर उसी महल्ले में मुस्लिम बच्चों की बड़ी तादाद सिर्फ सरकारी स्कूलों में या प्राइवेट इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पढ़ती है। जरूरत है कि ऐसे महल्लों में मसाई (शाम के) मकतबों का इन्तिजाम किया जाए और घर–घर जा कर ऐसे बच्चों को शाम के मकतब में ला कर उनको दीन की बुनियादी (मौलिक) बातें पढ़ाई जाएं यह काम भी अल्लाह तआला अपने कुछ बन्दों से ले रहा है। लखनऊ के दखिन जानिब बेहसा गांव में नदवे की ओर से अच्छा काम हो रहा है। हम को चाहिए कि हम अपने महल्ले का जाइज़ा (अवलोकन) लें और जो भाई अन पढ़ मिलें उनको समझा बुझा कर उनसे शाम में कुछ वक्त ले कर उनको लिखना पढ़ना सिखाने की कोशिश करें। जब मैं गांव में रहता था तो मैंने यह काम किया। उस वक्त जहां अनपढ़ों ने कुछ पढ़ लिया था वही आपसी मेल व महब्बत में खूब इज़ाफा हुआ था। मैं तो अब 80 वर्ष में हूँ जवानों को मेरा मशवरा है कि वह इसमें कोताही न करें और यह काम अंजाम देकर इसका फाइदा देखें।

❖❖❖

माहे मुबारक

आ गया माहे मुबारक आ गया
बरकतों का ढेर ले कर आ गया
सहरी खाओ और लो उस पर सवाब
रोज़े रखो फर्ज़ हैं ये तो जनाब
सब नमाज़े वक़्त पर पढ़ना ज़रूर
पाओगे सत्तर गुना सब पर सवाब
शाम को इफ़्तार का लूटो मज़ा
खाओ अपने पेट में और लो सवाब
चौकसी से तुम तरावीह भी पढ़ो
सोचो तो इसमें भी कितना है सवाब
दिल से अब अपने नबी-ए-पाक पर
रब से रहमत मांगो और पाओ सवाब

इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इद्दत

प्रश्नः पति के मरने अथवा तलाक़ देने पर पत्नी ही क्यों इद्दत में बैठती ?

उत्तरः मुस्लिम महिलाओं से सम्बन्धित विषयों पर विशेषतः तलाक़, पर्दा और इद्दत आदि विषयों पर विकृत मानसिकता के लोगों का रंग तुरन्त बदल जाता है और वह इस्लाम को बदनाम करने के लिए रोज़ नये—नये कुतर्क तलाश करते हैं। हालांकि उनके पूर्वजों का इतिहास और इनका वर्तमान देखा जाए तो स्त्री जाति को जितना इन्होंने अपमानित किया है किसी ने नहीं किया। इन्हीं के गढ़े हुए लिव इन रिलेशनशिप के ढ़कोसले ने विवाह नामक संस्था के अस्तित्व पर सवालिया निशान खड़ा करना शुरु कर दिया है, ऐसे में उनके यहाँ तलाक़ और इद्दत की कल्पना बेमानी है?

भारत में विधवा की स्थिति—

स्वतंत्रता पूर्व हिन्दू धर्म में पति की मृत्यु पर पत्नी जीवित रहने का अधिकार खो बैठती थी। उन्हें सभ्य समाज सती होने अर्थात पति के साथ ज़िन्दा जल जाने पर मजबूर करता था। आज भी राजस्थान आदि क्षेत्रों में सती प्रथा जीवित है। इसी प्रकार दक्षिण में इस युग में भी महिलाओं को देवदासियों का रूप धारण करा मन्दिरों, मठों में नारकीय जीवन व्यतीत करने पर विवश किया जाता है। देश के कुछ भागों में उनसे वेश्यावृति कराये जाने का मामला प्रकाश में आये दिन आता रहता है।

पवित्र कुर्आन में इद्दत—

"और जो लोग मर जाएं तुममें से और छोड़ दें अपनी पत्नियां, तो चाहिए कि वह पत्नियां प्रतीक्षा में रखें अपने आपको चार महीने दस दिन"। (सूरः बक़रः 234)

इसी प्रकार तलाक़ से सम्बन्धित पवित्र कुर्आन में है:—

"और तलाक़ वाली औरतें प्रतीक्षा में रखें अपने आपको तीन माहवारी तक, और उनको हलाल नहीं कि छुपा रखें जो पैदा किया अल्लाह ने उनके पेट में"।

(सूरः बकर—228)

इस्लाम में विधवा अथवा तलाक़शुदा औरतों को इद्दत में बैठने को इसलिए कहा गया है कि वह गर्भवती हैं या नहीं, उसके गर्भ में शिशु पल रहा है या नहीं। इसी प्रकार इस बात का समय दिया जाना उद्देश्य होता है कि वह इस दौरान अपने लिए सुशील वर ढूँढ लें, और यदि उसकी कोई संतान है तो वह बच्चों के पालन—पोषण हेतु उचित प्रबन्ध करले।

पश्चिम में तो विधवाओं और तलाक़शुदा औरतों के लिए कोई मानक निर्धारित नहीं है। ऐसे में उनके गर्भ में पल रहा बच्चा किसका है ये पता लगाना मुश्किल होता है। जबकि इस्लाम ने तलाक़

अथवा पति की मृत्यु पर इद्दत का कानून लागू कर स्वच्छ और साफ सुथरे समाज की रचना की तो उसे असभ्य कहा जा रहा है। है न हैरत की बात!

दाएं करवट सोना

प्रश्नः इस्लाम दाएं करवट होकर सोने को क्यों कहता है?

उत्तरः ये बात सभी विद्वान जानते हैं कि इस्लाम एक साइंसी मज़हब है और उसके प्रत्येक कर्म से साइंस का पहलू निकलता है। अतः हम संक्षेप में इस्लाम और साइंस के गठजोड़ को उजागर करेंगे।

पवित्र हदीस में है–

''हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपने बिस्तर पर आते तो अपने दाएं करवट लेट जाते थे''।

(बुख़ारी)

दाएं करवट सोना और नवीन विज्ञान–

डॉ0 कृष्ण लाल शर्मा जिन्होंने मुम्बई के अस्पताल में नींद के ऊपर रिसर्च किया है, कहते हैं कि जिन रोगियों को लगातार दाएं करवट सुलाया गया वह रोगी बहुत जल्द स्वस्थ हो गए और जिन रोगियों को बाएं करवट सोने दिया गया वह बेचैन ही रहे।

(सुन्नते नबवी और जदीद साइंस)

नवीन सोध से यह बात निकल कर आई है कि दाएं करवट सोना हार्ट और (Stomacth) आमाशय के रोगों से बचाता है। यहाँ तक की नीम बेहोशी और कोमा से भी सुरक्षित रखता है।

बाएं करवट सोने की हानि–

बाएं करवट सोने से आमाशय और आंतों का बोझ हृदय पर पड़ता है जिसके कारण दौराने खून (Blood Circulation) और दिल की हरकतों में कमी हो जाती है।

उपर्युक्त कथनों से ज्ञात हुआ कि इस्लाम क्यों दाएं करवट सोने की ताकीद करता है।

❖❖❖

जगनायक.....

अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ लाए और रास्ते ही में अल्लाह तआला ने यह आयतें नाज़िल फरमाईः–

अनुवादः ''ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमने तुमको फतह दी, सरीह व साफ फ़तह (ताकि तुमको इस तरह यह बात हासिल हो जाए कि) खुदा तुम्हारें अगले ओर पिछले गुनाह बख़्श दे और तुम पर आपनी नेमत पूरी कर दे और तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए और खुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे'' (सूरा फतहः 1–3)

हज़रत उमर रज़ि0 ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या यह फतह है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हाँ!

यह मुआहिदा हकीक़त में मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी फतह का ज़रिया साबित हुआ, जैसा कि बाद के हालात व वाक़िआत ने साबित कर दिखाया[1]।

1. सही मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब सुलह हुदैबिया ❑❑

समाज से बुराइयां दूर कीजिए

—अमतुल्लाह तस्नीम

एहसान जताना—

औरतों में यह आदत भी बहुत पाई जाती है, देकर एहसान (आभार) जताना। एहसान करके अपना गुलाम समझना। जबकि ऐसा देना—दिलाना सब बेकार है, इससे तो न देना बेहतर है कि बेचारे ग़रीब का एहसान के बोझ से सिर तो न झुकता, वह शर्माता तो नहीं, यह तो बहुत दुखद बात है। वास्तविकता यह है कि जो काम अल्लाह तलाआ के लिए किया जाता है तो उसमें अल्लाह से बदला मिलने की आरजू होती है और दुनिया से कोई अपेक्षा नहीं होती किन्तु जहां दुनियावी अपेक्षा हुई वहां यही होगा कि दुनिया से उसका बदला मिलने की आशा और ना मिले तो दुःख भी होगा और ज़बान से बार बार उसका उल्लेख भी होगा, यह इतनी बुरी आदत है कि इसका फायदा न दुनिया में है न आख़िरत में। अल्लाह तआला अपने कलाम पाक में फ़रमाता है— ऐ ईमान वालो! अपनी ख़ैरात को एहसान जता कर और तकलीफ़ दे कर बर्बाद न करो।

लान-तान करना—

इसी तरह लानत (धिक्कार) करना भी बहुत ही कठोर और बेबाकी (दुस्साहस) की बात है औरतें बहुत ज़्यादा लानत करती हैं और फटकार लगाती हैं, जबकि यह अल्लाह और रसूल सल्ल0 के यहां बहुत ही बुरी बात है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ताने देने वाला, लानत करने वाला, फहश बकने वाला, और ज़ुबान दराज़ ईमान वाला नहीं हो सकता (यानी यह ईमान वाले के गुण और स्वभाव नहीं हैं)।

एक हदीस में हज़रत अबूदाऊद रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जब कोई किसी पर लानत करता है तो वह लानत आकाश पर जाती है, आकाश के सब दरवाजे बन्द हो जाते हैं, फिर वह दाएं बाएं फिरती है और जब कहीं रास्ता नहीं पाती तो जिस पर लानत की गई थी अगर वह लानत के लायक होता है तो उस पर पड़ती है वरना पलट कर वह लानत करने वाले पर आ पड़ती है।

लानत करने वालों को एक बड़ी महरूमी का सामना करना पड़ेगा वह महरूमी यह होगी कि वे कयामत के दिन किसी की सिफारिश न कर सकेंगे और न गवाह बन सकेंगे।

क़स्में खाना—

क़स्में भी आज कल आम हो गई हैं, इस का महत्व दिलों से बिल्कुल समाप्त हो गया है, बात बात पर कसम खाना अब बाएं हाथ का खेल है। अपने ऊपर दिन भर में

न जाने कितनी कस्में चढ़ा लेती हैं, फिर इसकी तनिक चिंता नहीं कि कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अनिवार्य हुआ या नहीं। अफ़सोस है कि कितने गुनाह ऐसे हैं जो दिन रात हमसे होते रहते हैं और हमें कुछ ख़बर नहीं, अल्लह का फरमान है।

अल्लाह तुम्हारी व्यर्थ कस्मों को नहीं पकड़ता, किन्तु वह तुम्हारी उन कस्मों पर पकड़ करता है जिनको तुम मज़बूत कर लो, तो इसका कफ़्फ़ारा दस निर्धनों को मध्यम श्रेणी का खाना देना है, जैसा तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उनको कपड़े पहनाना और अगर यह प्राप्त न हो तो तीन रोज़े रखे। जब तुम कसम खा बैठो और अपनी कस्मों की रक्षा करो।

मुसलमानों की माँ हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी जो हर बात पर वल्लाह (अल्लाह की क़सम) बिल्लाह (अल्लाह की क़सम) कहा करते हैं। (बुख़ारी शरीफ)

अल्लाह तआला का यह फ़रमान है और यहां यह हालत है कि बात–बात पर साहसपूर्वक कस्में खाती हैं और कफ़्फ़ारे की चिन्ता तो क्या परवाह भी नहीं, मुसलमानों की माँ हज़रत आइशा रज़ि0 ने एक बार अपने भाँजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 से नाराज़ हो कर क़सम खाई कि उससे बात न करूंगी, फिर मनाने की सबने बड़ी कोशिश की और सिफ़ारिश भी की और उन्होंने भांजे की बेक़रारी देखी और इस हदीस से डरीं भी कि "जो किसी मुसलमाना से तीन दिन से अधिक बोल–चाल बंद रखेगा और इसी हालत में मर जाएगा वह दोज़ख़ में जाएगा" अतः उन्होंने क़सम तोड़ दी और उसके कफ़्फ़ारे में चालीस गुलाम आज़ाद किये, फिर भी जिस समय क़सम तोड़ने का ख़याल आता था तो इतना रोती थीं कि आँसुओं से आँचल तर हो जाता था, और अब तो क़सम खाना और तोड़ देना कोई बात ही नहीं, वास्तविकता यह है कि न अल्लाह का आदर दिलों में बाक़ी रहा है और न उसके नामों का महत्व।

कसम खाने के बाद भलाई की बात देख कर उसको अपनाने का आदेश हदीस में आया है, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समोरह बिन जुंदुब रज़ि0 कहते हैं कि मुझसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर तुम किसी बात पर क़सम खालो फिर उससे बेहतर बात देखो तो उसको अपनालो और क़सम का कफ़्फ़ारा दे दो। (बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ)

और इसी प्रकार अल्लाह के सिवा दूसरे की क़सम खाने की मनाही हदीस में आई है: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 कहते हैं कि मैंने एक व्यक्ति को काबे की क़सम खाते सुना तो कहा अल्लाह के सिवा किसी की क़सम न खाओ, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जिसने अल्लाह तआला के अलावा किसी की क़सम खाई तो उसने कुफ्र किया। तिर्मिज़ी शरीफ़)

झूठ बोलना–

झूठ भी आज कल इतना अधिक प्रचलित हो गया है कि कला बन चुका है, बात–बात पर झूठ बोलना और झूठी कस्में खाना और बहुत ज़्यादा बढ़ा चढ़ा कर किसी बात को पेश करना खेल–तमाशा हो गया है, जबकि झूठ ऐसी चीज़ है जो सारी बुराईयों की जड़ है, हर बुराई की शुरुआत है।

एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि मुझमें यह आदतें हैं, चोरी, शराब और जुवा। आपने फ़रमाया झूठ छोड़ दो, वह चला गया, लेकिन दिल में सोचता था कि एक झूठ छोड़ देने से दूसरी बुराइयाँ कैसे जा सकती हैं, रात आई चोरी करना चाहा लेकिन तुरन्त यह ध्यान आया कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूछेंगे तो झूठ बोलना पड़ेगा, यह सोच कर चोरी का इरादा छोड़ दिया। फिर शराब, फिर जुवे का विचार हुआ और हर बार इसी डर ने रोका की हुजूर सल्ल0 पूछेंगे तो झूठ बोलना पड़ेगा। अतः एक झूठ के डर से उसकी सब बुराइयाँ छूट गईं।

हक़ीक़त में झूठ ऐसी ही चीज़ है कि जो इससे न बचा वह किसी बुराई से न बचा, फिर झूठ बोलने वाले पर विश्वास नहीं हो सकता, मगर अब यह हाल है कि विश्वास समाप्त हो जाए, अपमानित होना पड़े, चाहे कुछ हो लेकिन झूठ न छूटे क्योंकि वह ऐसी कला है जिससे इस समाप्त हो जाने वाली दुनिया की हर चीज़ प्राप्त होती है, अपमान हो तो हो, लोंगों का विश्वास जाए तो जाए कुछ दिन या कुछ घण्टे का फायदा तो हो गया।

झूठे व्यक्ति का अंजाम बड़ा खराब है, एक हदीस में सच्चे व्यक्ति और झूठे व्यक्ति के अंजाम को इस प्रकार बयान किया गया है:–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि सच्चाई भलाई की ओर मायल करती है और भलाई जन्नत मे ले जाती है और आदमी सच बोलते बोलते अल्लाह के यहां बड़ा सच्चा और सत्यवादी गिना जाता है, और झूठ गुनाह की ओर आकृष्ट करता है और गुनाह दोज़ख़ में ले जाता है और आदमी झूठ बोलते–बोलते अल्लाह के यहां बड़ा झूठा लिख लिया जाता है।

(बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ)।

और हदीस में यह भी आया है कि झुठ बोलना मुनाफ़िक़ (कपटी) की एक पहचान है, और पवित्र कुर्आन में झूठ बोलने वालों पर लानत भी की गई है। इसलिए इस बुराई से बहुत ज़्यादा बचने की ज़रूरत है।

(तिर्मिज़ी शरीफ)।

शिर्क व बिदअत और रीति-रिवाज–

यह रोग भी विशेष रूप से औरतों का है, वे इसमें इतना अधिक ग्रस्त हैं कि फर्ज़ इबादत क़ज़ा हो जाये लेकिन शिर्क व बिदत का कोई हिस्सा न छूटे, जबकि शिर्क व बिदअत के बारे में

कुर्आन व हदीस में ऐसी वईदें (धमकियाँ) आई हैं कि दिलवाले थर्रा उठें, मगर उनसे डरे कौन? मस्जिदें सूनी पड़ी हैं कबरों पर सज्दे ही सज्दे हो रहे हैं, अल्लाह जो पैदा करने वाला है और सारे जहान का मालिक है उसको भूल गये और बुजुर्गों पर दिल व जान से कुर्बान, उनसे मांगा भी जा रहा है, उनके नाम की नज़्र व न्याज़ भी हो रही है और पाँच वक्त की नमाज़ जो फ़र्ज़ है वह अदा नहीं हो सकती, बिदअत को लीजिए तो कूँडे भरे जाते हैं, शबेबरात के हलवे का नाग़ा न हो, मोहर्रम में खिचड़ा जरूर पके, ग्यारहवीं का पुलाव–जर्दा पकाया जाए मगर बकरईद के दिन जो कुर्बानी वाजिब है उसके लिए पैसा नहीं, अक़ीक़े के लिए एक बकरी मुश्किल है, हमने माना कि इसमें मर्दों का भी हाथ है, लेकिन अगर औरतें इस काम को छोड़ दें और ज़िद करलें तो सब मर्द सीधे रास्ते पर आजाएं मगर यह सारी खराबियाँ औरतों ही की ज़ात से हैं औरतें ही अधिकतर इस मामले में पकड़ी जाएंगी।

शिर्क ऐसा गुनाह है कि इसके बारे में अल्लाह का फ़रमान है कि अगर अल्लाह तआला चाहेगा तो सारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, लेकिन शिर्क न माफ़ करेगा और बिदअत के बारे में हुजूर सल्ल0 का इरशाद है कि "जिसने दीन में कोई नई बात आविष्कार की वह हम में से नहीं है।" एक हदीस में है कि हुजूर सल्ल0 हौज़े कौसर पर लोगों को पानी पिलाएंगे और बिदअत करने वालों से मुँह फेर लेंगे।

हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 फरमाते थे कि बेहतर कलाम अल्लाह की किताब है और बेहतर तरीक़ा मुहम्मद सल्ल0 का तरीक़ा है और बुरे काम नई बातें हैं और हर बिदअत गुमराही है। (मुस्लिम शरीफ)

अल्लाह तआला ने साफ़ फ़रमा दिया है:–

हमने किताब में किसी प्रकार की कमी नहीं की।

आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए दीनके रूप में इस्लाम पर राज़ी हो गया।

इसी प्रकार रीति–रिवाज की पाबंदी है। रस्म ज़रूर अदा करें चाहे चोरी करें, डाका डालें, रिश्वत लें, सूद लें लेकिन रस्मों में फ़र्क़ न आए, आज रस्म व रिवाज की वजह से घरानों के घराने तबाह व कंगाल हो गए लेकिन इस तबाही पर भी आँखें नहीं खुलीं।

शगुन व भविष्यवाणी–

औरतें ही इस बीमारी से ग्रस्त हैं, उल्लू बोला तो वे सहमीं, बिल्ली–कुत्ता रोया तो डरीं, कव्वा सिर पर बैठा तो समझीं कि बस अब मौत है, कव्वा दीवार पर बैठा व बोला तो शगुन लिया, टोने–टोटके, तावीज़–गण्डे, मान–दान, खुलासा यह कि उनकी पूरी ज़िन्दगी इसी की भेंट चढ़ जाती है। फिर जैसा अक़ीदा होता है वैसा ही अल्लाह कर भी देता है। हदीसे कुदसी है कि :– हम बन्दे

के गुमान के साथ हैं। (जैसा वह गुमान करता है वैसा ही हम मामला करते हैं)।

एक मजलिस में हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया मेरी उम्मत में सत्तर हज़ार आदमी बेहिसाब व किताब जन्नत में जाएंगे। लोगों को हैरत हुई कि वे कौन लोग हैं? हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया :–

यह वे लोग हैं जो फूँक झाँड़ नहीं करते और न करवाते हैं, और न शगुन लेते हैं और अपने रब पर भरोसा करते हैं।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अप–शगुन को अच्छा नहीं समझा, अबू दाऊद शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 बुरा शगुन नहीं लेते थे।

और अब्दुल्ला बिन उमर रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया बुरा शगुन लेने की कोई हक़ीक़त नहीं। (बुखारी व मुस्लिम शरीफ़)

फ़ैशन परस्ती–

बारीक कपड़ा तो इतना प्रचलित हो गया है कि जिसको देखो वही पहने हुए है, हर समय नये फैशन बदल कर और पतला से पलता कपड़ा पहन कर बे धड़क बिना बुर्का के घर से निकलना, हर समय बाज़ारों का चक्कर लगाना, गली कूचों की ख़ाक उड़ाना, नये अन्दाज़ से सड़कों पर चलना, बेहयाई बेपरदगी के साथ गैर मर्दों से मिलना, हँसती खेलती एक ओर से आना और दूसरीओर से निकल जाना, इन्हीं औरतों के बारे में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया–

वे औरतें जो ज़ाहिर में कपड़े पहनती हैं मगर हक़ीक़त में नंगी हैं मायल (आकृष्ट) करने वालियां, मायल होने वालियां, उनके सिर बुख्ती ऊँट के झुके हुए कोहान की तरह हैं, ऐसी औरतें न जन्नत में जाएंगी, न उसकी खुशबू पाएंगी जबकि उसकी खुशबू दूर से पहुंचती है।

ख़ुदा मालूम ज़माना कितनी करवटें बदल चुका है, क्रांति पर क्रांति आई, लाखों बस्तियाँ उजड़ गई, सैकड़ों मकान ध्वस्त हो गये, सैकड़ों बस्तियां भूकंप से उलट–पलट गईं, मगर वाह रे दिल, इसमें बदलाव न आया, यह अपनी जगह अटल है, वही गुनाह और अल्लाह रसूल की बात न मानना, वही अल्लाह को भुला देना, वही शौक़–ज़ौक़ वही सैर–सपाटे। कल की बात है कि घोर वर्षा और बाढ़ ने कितनी जानें ले लीं, कितना धन–दौलत और सामान बर्बाद हुआ, कितने मकान नष्ट हो गये, कितने इंसान बेघर व बर्बाद हो गये, उपवास किये, मुसीबतें झेलें, कैसा सबक लेने का समय था, लेकिन बजाए सबक लेने के सैर–सपाटों की शौक़ीन, इन बेकस इंसानों की मुसीबतों को तमाशा समझ कर इस भयावह दृश्य का तमाशा देखने के लिए बड़ी संख्या मे निकल आईं और ऐसे स्थानों पर भीड़ लग गई जहाँ इन बेकसों को मदद पहुँचाई जा रही थी। लोग उस समय मदद पहुँचा रहे थे और यह औरतें निकल रही थीं।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक शख़्स ने रिहायशी मकान के अलावा एक दूसरा मकान इस मक्सद से खरीदा है कि उसके किराया हासिल किया जाए, उस मकान में एक स्कूल किराये पर चल रहा है, क्या उस मकान पर ज़कात वाजिब है? अगर ज़कात वाजिब है तो उसकी अदायगी किस तरह होगी?

उत्तरः मकान पर उस वक्त ज़कात वाजिब होती है जब मकान तिजारती मक्सद से खरीदा गया हो लेकिन अगर मकान जरूरत से ज़्यादा हो और तिजारती मक्सद न हो बल्कि किराया पर लगाना हो या और किसी काम में इस्तेमाल करना हो तो उस पर ज़कात वाजिब नहीं।

(रद्दुल मुहतार 179/3)

प्रश्नः एक शख़्स के पास कुछ बसें हैं जो किराये पर चलती हैं सवाल यह है कि उन बसों की मालियत पर ज़कात वाजिब है या मिलने वाले किराये पर?

उत्तरः बसों या उनकी मालियत पर ज़कात वाजिब नहीं होगी क्योंकि कस्बे मआश (रोज़ी कमाना) के जो आलात हैं उन पर ज़कात वाजिब नहीं है, फुक़हा ने इस की सराहत कर दी है। (इसी तरह हिरफत और पेशा के आलात पर भी जकात नहीं है) रद्दुल मुख्तार 183/3) अलबत्ता इन बसों से जो किराया हासिल हो अगर वह बक़द्रे निसाब हो और उस पर साल गुज़र जाए तो उस पर ज़कात वाजिब होगी।

(फतावा हिन्दिया 167/1)

प्रश्नः क्या ज़कात वाजिब होने के लिए साल गुजरने की जो शर्त लगाई जाती है क्या हर तरह के माल में यह शर्त है? या बाज़ में कुछ तफ्सील से बताएं।

उत्तरः खेतों की पैदावार और फलों में साल गुज़रने की शर्त नहीं है, बल्कि जैसे ही फसल कटे और फल तोड़े जाएं उसी वक्त उश्र का निकालना वाजिब है। उनके अलावा सोने चाँदी नक्द रकम और तिजारत के सामान वगैरह में साहिबे निसाब होने के बाद उस माल पर साल गुज़रना शर्त है।

(फतावा हिन्दिया 173/1)

प्रश्नः एक शख़्स ने अपने घर के ज़ेवरात रिहन पर रख दिये हैं दो साल गुज़र चुके हैं क्या उन ज़ेवरात पर ज़कात वाजिब होगी या नहीं?

उत्तरः रिहन पर रखी हुई चीज़ पर ज़कात नहीं है क्योंकि ज़कात वाजिब होने के लिए ज़रूरी है कि माले ज़कात मुकम्मल तौर पर उसकी मिल्कीयत में हो, रिहन पर रखी हुई चीज़ें मुकम्मल तौर पर मिल्कीयत में नहीं होती हैं इसलिए उनपर ज़कात नहीं है। (फत्हुल कदीर 221/2, फतावा हिन्दिया 172/1)

प्रश्नः जो रकम बैंक में फिक्स डिपाजिट के तौर पर जमा हो क्या उस पर जकात वाजिब होगी?

उत्तरः पहली बात तो यह है कि फिक्स डिपाजिट शरअन जाइज़ नहीं है ताहम अगर किसी ने रक़म बैंक में फिक्स डिपाजिट कर दी है तो उस पर ज़कात वाजिब होगी क्योंकि उसकी हैसियत अमानत की होती है और अमानत वाली रक़म पर ज़कात वाजिब होती है।

(फत्हुल क़दीर 221/2)

प्रश्नः मकान के मालिक और दूकान के मालिक के पास किराये दार की जो रकम जमानत के तौर पर जमा रहती है क्या उस पर जक़ात वाजिब है या नहीं? अगर ज़कात है तो मालिक मकान या किराये दार पर?

उत्तरः मालिके मकान या मालिके दूकान के पास जो रक़म किराये दार की रहती है उसकी हैसियत रिहन की है और रिहन पर ज़कात वाजिब नहीं इसलिए उसकी जकात न मालिके मकान पर है और न किराये दार पर।

(देखिए फत्हुल कदीर 164/1)

प्रश्नः प्राविडेण्ट फण्ड की रक़म जो अभी हासिल न हुई हो सरकार या कम्पनी ही के कब्ज़े में हो क्या उस पर ज़कात वाजिब है? और जब रकम मिल जाए तो क्या पिछले सालों की भी ज़कात अदा करनी होगी? रक़म मिलने के बाद ज़कात वाजिब होने के लिए क्या उस पर साल गुज़रना ज़रूरी है या मिलते ही ज़कात वाजिब होगी?

उत्तरः प्राविडेण्ट फण्ड की रक़म जो अभी हासिल न हुई हो पूरी तरह मिल्कीयत में न होने के सबब उस पर जकात नहीं है अल्बत्ता यह रकम जब हासिल हो जाएगी उसके बाद साल गुजरने के बाद जकात वाजिब होगी, यहजकात रकम हासिल होने के बाद ही के सालों की वाजिब होगी पिछले वर्षों (जब की रकम सरकार या कम्पनी की मिल्क और कब्ज़े में रही हो) की ज़कात नहीं देनी होगी।

(रद्दुल मुख्तार 171,172/3)

प्रश्नः जो लोग अपने घरों में कम्प्यूटर इण्टरनेट और टी0वी0 वगैरह रखते हैं कया उन पर ज़कात वाजिब होती है?

उत्तरः कम्प्यूटर और दूसरे आलात अगर अपनी ज़रूरत और इस्तेमाल के लिए हैं, तिजारत के लिए नहीं तो उन पर जकात वाजिब नहीं होती है।

(मुलाहजा हो, बदायुस्सनाए 95/2)

प्रश्नः आज कल हमारे मुल्क में आम तौर पर कोई काम रिशवत के बिना नहीं होता अगर कोई काम जाइज हो उसमें दूसरे का नुक़सान भी न हो और रिश्वत के बिना काम न हो तो ऐसी सूरत में रिशवत देकर काम कराया जा सकता है या नही? रिशवत देने वाला गुनहगार तो नहीं होगा?

उत्तरः रिशवत इस्लाम में हराम है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रिशवत लेने वाले और रिशवत देने वाले दोनों पर लानत भेजी है। (अबू दाऊद 504/2)

लेकिन अपना कोई जाइज हक और काम हो उसे हासिल करने पर दूसरे पर जुल्म न होता हो और बिना रिशवत के वह हक न मिल पा रहा हो तो इस

मजबूरी की हालत में रिशवत देने पर गुनाह न होगा लेकिन रिशवत लेना हर सूरत में हराम है, अल्लामा शामी ने सराहत की है कि जान व माल के नुक़सान से बचने के लिए रिशवत देने में गुनाह न होगा लेकिन लेने वाले के लिए हराम है।

(रद्दुल मुहतार 35/8)

प्रश्नः अगर कोई शख़्स सरकारी आफिस में नौकर हो और उसको रूपयों की बड़ी ज़रूरत हो तो ऐसी हालत में रिशवत लेने की उसके लिए गुंजाइश है या नहीं?

उत्तरः रिशवत लेना हराम है, बड़ा गुनाह है और अल्लाह की लानत का सबब है इसलिए सख़्त ज़रूरत और मज़बूरी की हालत में भी रिशवत लेना जाइज नहीं है अगर किसी को सख़्त ज़रूरत हो तो उसकी तकमील के लिए कोई जाइज़ तरीक़ा इख़्तियार करे रिशवत लेकर कोई काम करना जाइज़ नहीं है।

प्रश्नः आज कल रवाज हो गया है कि मुख़्तलिफ कामों को अंजाम देने वाले लोग कमीशन देते हैं जैसे इकसरे वाले मरीज़ भेजने वाले डॉक्टरों को कमीशन देते हैं, इसी तरह स्टेशन से मुसाफिर लाने वाले रिक्शा व आटो के ड्राइवरों को कमीशन देते हैं क्या डॉक्ट्रों और रिक्शा वालों के लिए यह कमीशन लेना जाइज़ है?

उत्तरः कमीशन की यह सूरत जो आजकल काफी राइज़ हो चुकी है रिशवत में दाखिल है और जाइज़ नहीं है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रिशवत लेने और रिशवत देने वाले दोनों पर लानत फरमाई है।

प्रश्नः अगर किसी को अपने से ऊपर वालों को रिशवत देना पड़ती है इस मकसद से वह दूसरों से रिशवत लेते हैं तो क्या यह सूरत जाइज़ होगी?

उत्तरः इसमें दो गुनाह हैं एक रिशवत लेने का दूसरा रिशवत देने का, नीचे के नौकरों या अफसरों को चाहिए कि ऐसे मुआमलात वे हिम्मत से काम लें और ईमानदारी पर जमे रहें और अल्लाह की रज़ा और आख़िरत में जवाब देही का खौफ सामने रखें इन्शा अल्लाह रबबे करीम की मदद होगी।

प्रश्नः सरकारी अस्पतालों में मुफ्त दवाएं मिलती हैं लेकिन रिश्वत न दी जाये तो कम्पाउन्डर और वहां के नौकर डाट देते हैं और गरीब आदमी बाहर जाकर इलाज नहीं करा सकता अगर कुछ रूपये देनेपर दवा मिल जाती है तो ऐसी सूरत में यह रूपये नौकरों को देना रिशवत तो नहीं है? क्या शरअ़ में इसकी गुंजाइश है?

उत्तरः सरकार की तरफ़ से जब दवा का इन्तिज़ाम है और जो मरीज़ वहां इलाज करा रहा हो उसको वहां दवा लेने का हक है, दवा मौजूद हो उसके बावजूद बिना रूपया दिये न मिल सकती हो तो मजबूरन रूपये दे कर दवा लेने में गुनाह न होगा लेकिन रूपये लेने वालों के लिए यह रिशवत है और हराम है।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

अब्दुल हामिद बांग्लादेश के राष्ट्रपति निर्वाचित-

बांग्लादेश के वरिष्ठ राजनीतिज्ञ और संसद अध्यक्ष अब्दुल हामिद को निर्विरोध देश का नया राष्ट्रपति चुन लिया गया है। सत्ताधारी आवामी लीग ने उन्हें इस शीर्ष पद के लिए नामित किया था।

मुख्य चुनाव आयुक्त रकीबुद्दीन अहमद ने कहा, अब्दुल हामिद को निर्विरोध बांग्लादेश का 20वां राष्ट्रपति चुन लिया गया है। अर्से तक प्रधानमंत्री शेख हसीना के सहयोगी रहे 69 वर्षीय हामिद एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने इस पद के लिए नामांकन भरा। बीते 20 मार्च को सिंगापुर के अस्पताल में राष्ट्रपति जिल्लूर रहमान के निधन के बाद से हामिद कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में काम कर रहे हैं। वह लंबी अवधि से राजनीति में हैं। वह 26 वर्ष की उम्र में पहली बार नेशनल असेंबली के सदस्य चुने गए थे। बांग्लादेश में राष्ट्रपति का कार्यकाल पांच वर्ष का है। देश के शीर्ष पद के लिए हामिद की उम्मीवारी पर मुख्य विपक्ष बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी या किसी अन्य ने कोई आपत्ति नहीं जताई। आवामी लीग के वरिष्ठ नेता तुफैल अहमद ने आयोग में आमांकन पत्र दाखिल कराने के बाद बताया, राष्ट्रपति पद के लिए हामिद एक योग्य उम्मीदवार हैं।

एड्स के इलाज में वैज्ञानिकों के हाथ बड़ी कामयाबी-

लंदन— दुनिया भर के डॉक्टर और वैज्ञानिक एड्स पर काबू पाने के लिए नई तकनीकों के विकास पर काम कर रहे हैं।

उनकी कोशिशों से काफी हद तक इस जानलेवा बीमारी के इलाज में कामयाबी मिली है। अब इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ते हुए फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने ऐसी तकनीक इजाद की है जिसकी मदद से मस्तिष्क तक एंटी एड्स दवाओं को पहुंचाया जा सकेगा। इससे बीमारी के इलाज में काफी मदद मिलेगी।

शोधकर्ताओं के दल में भारतीय मूल के वैज्ञानिक माधवन नायर भी शामिल हैं। नायर और उनके सहयोगियों द्वारा मिलकर विकसित की गई तकनीक में 'एजेडटीटीपी' नामक दवा को मस्तिष्क की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं तक पहुंचाया जाता है। इससे कोशिकाओं की मरम्मत होती है और धीरे—धीरे एचआईवी वायरस का संक्रमण कम होने लगता है।

भारत इजरायल संबंधों के बीस वर्ष पर डाक टिकट-

भारत और इजरायल के राजनयिक संबंधों के बीस वर्ष पूरे होने के अवसर परभारतीय डाक ने दो डाक टिकटों का एक सेट जारी किया

शेष पृष्ठ.....04 पर